RNI No. : UPHIN-2009/29369

डाक पंजीकरण : KANPUR HO/002/2022-24
प्रधान डाकघर कानपुर-डाक प्रेषण दिनांक 29/30

वार्षिक सदस्यता शुल्क 100/-

द्रविड़ भारत

www.dbindia.org.in

सामाजिक परिवर्तन का मासिक पत्र

फरवरी-2022 | वर्ष - 14 | अंक : 01 | मूल्य : 5/-

सम्पादकीय

RNI No. : UPHIN-2009/29369

संपादक : उमेश्वरी देवी, मो.: 9005204074
संरक्षक मण्डल : मा. रामदीन अहिरवार (महोबा), मा. राम अवतार चौधरी (सहा.अभि. जलकल विभाग), मा. छविलाल वर्मा (चरखारी), मा. हरिनाथ राम (दिल्ली), मनीष कुमार मो. 9415053621
राज्य ब्यूरो प्रमुख उत्तर प्रदेश :
सुनील कुमार, ढेलवा, गाजीपुर (उ.प्र.), मो.: 9935363730, 9170836363
योगेन्द्र कुमार (ब्यूरो चीफ चित्रकूट मण्डल) मो.: 8299162841
क्षेत्रीय सम्पादकीय कार्यालय :
40/69, डी-5, श्यामलाल का हाता, परेड, कानपुर (उ.प्र.), मो. : 8756157631
ब्यूरो प्रमुख कानपुर मण्डल :
पुष्पेन्द्र गौतम, मल्हौसी, औरेया, उ.प्र. मो.: 9456207206
हरियाणा राज्य :
डा. रमेश रंगा, ग्राम-सराय, औरंगाबाद, पो.-बहादुरगढ़,जिला-झज्जर (हरियाणा),09416347052
कानूनी सलाहकार : एड. रामप्रकाश अहिरवार, एड. यू.के. यादव, मोती लाल वर्मा, एड. विजय बहादुर सिंह राजपूत, एड. रमाकान्त धुरिया, सुशील कुमार, कानपुर
मध्य प्रदेश राज्य : पुष्पेन्द्र कुमार
कार्यालय : ग्रा. व पो.-रामटौरिया, जिला-छतरपुर
छत्तीसगढ़ राज्य :
दिलीप कुमार कोसले, मो. : 09424168170
दिल्ली प्रदेश : C/o अनिल कुमार कनौजिया C-260, हर्ष विहार, हरिनगर एक्सटेंशन पार्ट-III, बदरपुर, नई दिल्ली-44, मो. : 09540552317
राजस्थान राज्य : रघुनाथ बौद्ध, श्याम रघु फुट वियर, दुकान नं.-1, गणेश मार्केट, पुलिस चौकी के सामने, अलवर, जिला-अलवर-301001, मो. : 09887512360, 0144-3201516
चिरंजीलाल बैरवा (व्यावस्थापक) मेहरा आदर्श विद्या मन्दिर, भीम नगर कालोनी, राज भट्टा, दिल्ली रोड, अलवर, जिला-अलवर, मो.-09829855349
बाबूलाल बौद्ध, अलवर, मो.-08058198233
संपादकीय/विज्ञापन प्रसार/पंजीकृत कार्यालय :
ग्रा व पो.-रिवई (सुनैचा), जिला-महोबा (उ.प्र.)
मो. : 9005204074, 8756157631
E-mail : dravinbharat1@gmail.com
प्रकाशक, मुद्रक एवं स्वामी
उमेश्वरी देवी द्वारा ग्रा. व पो.-रिवई (सुनैचा), जिला महोबा से प्रकाशित व श्रेय ऑफसेट प्रा. लि., 109/406, नेहरू नगर, कानपुर, 84/1, बी, फजलगंज, कानपुर से मुद्रित

प्रकाशित पत्रिका में प्रकाशित लेख, सामग्री, में संपादक की सहमति अनिवार्य नहीं है। इसमें किसी भी प्रकार का दावा या विचार मान्य नहीं होगा। लेख के विवादित होने पर लेखक ही उत्तरदायी होगा समस्त विवादों का निपटारा महोबा न्यायालय में होगा पत्रिका का संपादन एवं संचालन पूर्णतयः अवैतनिक एवं अव्यवसायिक है।

मिशन को बढ़ाने के लिए सहयोग करें -
भारतीय स्टेट बैंक, शाखा-पी.पी.एन. मार्केट, कानपुर
खाता सं.-33496621020 • IFSC CODE-SBIN0001784

सामाजिक बदलाव के लिए सत्ता पर कब्जा जरूरी - कांशीराम

नूरमहल (पंजाब) में शहीदी यादगार सम्मेलन हुआ

नूरमहल, 16 फरवरी (विशेष प्रतिनिधि द्वारा) : सामाजिक परिवर्तन व आर्थिक मुक्ति के लिए भारत की राजनीतिक ताकत दलितों के हाथ में होना जरूरी है ।

यह विचार आज बहुजन समाज पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष माननीय कांशीराम ने नूरमहल में फरवरी 1992 मे हुए चुनावों के दौरान मारे गये बसपा के 9 कार्यकर्ताओं की याद में आयोजित शहीदी को सम्बोधित करते हुए रखे । आगे आपने कहा कि पंजाब की धरती सामाजिक परिवर्तन व आर्थिक मुक्ति के इस संघर्ष में कभी भी पीछे नहीं रहा। श्री गुरु नानक देव जी से लेकर श्री गुरु गोविन्द सिंह जी तक दसो गुरुओं ने किये संघर्ष इसी उद्देश्य से सम्बन्धित थे। आपने यह भी कहा कि आज समूचे देश में इस परिवर्तन की जरूरत महसूस की जा रही है इसीलिए हम इन गुरुओं की वाणियों से शिक्षा लेकर इस बदलाव के लिए आगे बढ़ सकते है। आगे आपने जोर देते हुए कहा कि राजनीतिक सत्ता पर दलितों का कब्जा होना बहुत जरूरी है इसलिए बसपा इस दिशा में बहुत ही तेजी से आगे बढ़ रही है।

ब्राह्मणवादी शक्तियाँ हमारे हौंसले गिराने के लिए नूरमहल जैसे काण्ड करती है

माननीय कांशीराम जी ने आगे कहा कि अब वह समय निकल गया जो कि हमारी मुक्ति के आट मे दूसरी ब्राह्मणवादी पार्टियाँ सरकार बना लेती थी। अब हमें अहसास हो गया है कि हम अपने पैरों पर आप खड़े हो सकते है। जब भी बहुजन समाज इस दिशा की ओर बढ़ता है तभी यह बात ब्राह्मणवादी निजाम व दूसरी पार्टियों को पसंद नहीं आती है हमारे हौंसले को गिराने के लिए ही नूरमहल काण्ड जैसी हरकत करते हैं।

कांग्रेस की हालत पानी से भी पतली

आपने कहा कि आज लोगों के इकट्ठे को देखकर व मुल्क में हवा का रूख उस आधार पर यकीन है कि कांग्रेस की हालत पानी से भी पतली
करके रख देंगे। आपने भाजपा के बारे में कहा कि भाजपा के राज वाले पाँच राज्यों के नतीजे सामने है। अब नवम्बर 1994 में कांग्रेस शासन वाले पाँच राज्यों के नतीजे दलितों के 'दिल्ली तख्त' पर काबिज होने की सम्भावना को हकीकत में बदल देवेंगे।

आपने पंजाब बसपा लीडरशिप को भी सचेत करते हुए कहा कि जब बहुजन समाज इकट्ठे होकर हौंसले से आगे बढ़ता है तो उसे ब्राह्मणवादियों के हमले उन्हें पीछे नही हटा सकते परन्तु नेतृत्व की कमी दलितों की चाहत को बहुत नुकसान कर सकती है आपने स्पष्ट इशारा करते हुए कहा कि यदि जमी हुई लीडरशिप दलितों के लिए काम नहीं करती है तो उसमें सीधा दखल देकर भी ज्यादा काम कराया जा सकता है। आपने बसपा कार्य कर्ताओं को सलाह दी कि वह खरे-खोटे की पहचान करना सीखे व खरे नेतृत्व के पीछे भी एकमत होना जरूरी है एक दूसरे की टांग खेंचने का कार्य करने से सही नेतृत्व नहीं उभर सकता। आपने कार्यकर्ताओं को सलाह दी की हमें सूझवान बनना बहुत जरूरी है तभी हम एक साथ आगे बढ़ सकते है आपने इस अवसर पर खुशी जाहिर करते हुए कहा कि नौजवान कार्यकर्ताओं में ज्यादा लगन व उत्साह है हमें चुनाव के दौरान हुए शहीदों की याद रखते हुए तैयार रहना चाहिए, परन्तु होशियार नेतृत्व वही होता है तो कम से कम कुर्बानी देकर कौम के लिए अधिक कार्य कर सकें।

ब्राह्मणवादी धोखों के लिए दलित समाज स्वयं जिम्मेदार

माननीय कांशीराम जी ने दलित शोषित समाज को आगाह करते हुए कहा कि ब्राह्मणवादी समाज द्वारा हजारों वर्षो से हमारे साथ किये जा रहे धोखें पर धोखे के लिए हम स्वयं जिम्मेदार है। आपने कहा कि 'जदों असी खुद बन्दे बण गये ता ब्राह्मणवादियों नूं बन्दे दे पुत बणा लवांगे' आपने खुशी जाहिर कि अब दलित समाज बंदा (इन्सान) बनने की ओर बढ़ रहा है इसलिए देश कि सियासी फिजा (राजनीतिक तौर तरीकों) का रूख भी बदल रहा है आपने कहा कि देश भर में दलितों की इस बढ़ती जागरूकता व शक्ति के उभार देखकर जिस भी सूबे (राज्य) में इकट्ठे होने में कामयाब होते दिखते है उसी राज्य की सरकार पहले या बाद में दलितों के हक में दो चार ऐलान करने को मजबूर है आपने इस बारें में गुजरात, महाराष्ट्र, उड़ीसा, आन्ध्रा, कर्नाटक व पश्चिमी बंगाल के अपने दौरों के उदाहरण दिये ।

शक्ति के उभार देखकर जिस भी सूबे (राज्य) में इकट्ठे होने में कामयाब होते दिखते है उसी राज्य की सरकार पहले या बाद में दलितों के हक में दो चार ऐलान करने को मजबूर है आपने इस बारें में गुजरात, महाराष्ट्र, उड़ीसा, आन्ध्रा कर्नाटक व पश्चिमी बंगाल के अपने दौरों के उदाहरण दिये ।

इस शहीदी यादगार सम्मेलन को माननीय कांशीराम जी के अलावा सतनाम सिंह कैंथ (नेता विरोधी दल) बसपा पंजाब विधान सभा), विधायक हरगोपाल सिंह, विधायक सिंगारा राम संहूंगड़ा, विधायक अवतार सिंह करीमपुरी, विधायक गोपाल सरोहा, विधायक राज सिंह खेड़ी, विधायक निरमल सिंह निम्मा, विधायक धलदेव सिंह भट्टी, विधायक रजिन्दर कुमार, पूर्व सांसद हरभजन लाखा, सांसद मोहन सिंह फलियांवाला, मेजर प्रीतपाल सिंह, स. हरभजन सिंह ओसान, शीला रानी (बसपा महिला बिंग प्रधान बसपा), प्रवीण बंगा, पवन टीनू बलजीत सिंह मचाकी, सरदूल सिंह, डॉ. हरजिन्दर जखू, जसविन्दर तलवण्डी, सुरिन्दर कौर, हरदेव कौर, मानसिंह मनहेड़ा, जसपाल गड्डू, ऊंकारी राम, डी.पी. खोसला, मेजर सोमनाथ, परमजीत गौसल, स्वर्ण खोसला, स्वर्ण कौर भारती, रघुवीर सिंह, सेवा सिंह सेखांग आदि ने सम्बोधित किया।

इस सम्मेलन में माननीय कांशीराम जी द्वारा 9 शहीदों और जख्मियों के परिजनों को सिरोपे भेंट कर सम्मानित किया दूसरे शहीदीं की यादगार के लिए शहीदी यादगार भवन का नींव पत्थर रखा। सम्मेलन में लगभग 50 हजार से अधिक लोग शामिल हुए ।

सम्मेलन में मिशनरी कलाकारों में एस.एस. आजाद, मोहन बंगड़, हरनाम बहलपुरी, हरमेश हाकम सिंह एण्ड पार्टी ने जागृति गीत पेश करके श्रोताओं को मोह लिया, छोटे बच्चों में नीलम (ब्लाक महिलपुर, राजवंत सिंह, लखबीर सैनी द्वारा अम्बेडकरवादी गीत पेश किये मंच का संचालन ओमप्रकाश सिद्धम ने किया ।

साभार -
बहुजन संगठक, नई दिल्ली,
सोमवार, 7 मार्च 1994 हिन्दी सप्ताहिक
पेज सं. 1, वर्ष 14

संत रविदास का दर्शन

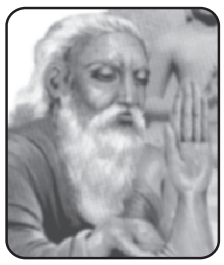

ब्राह्मणवाद के चिर–परिचित शत्रु बौद्ध धर्म का गुरु रविदास जी पर गहरा प्रभाव था। उन्होंने बौद्ध मत का ही जन भाषा में प्रचार किया। यही वजह है कि उन्होंने अपने समय के कट्टर ब्राह्मणों को शीघ्र ही अपना शत्रु बना लिया। यही शत्रुता बाद में गुरु जी की हत्या का सबब भी बनी। गुरुजी की वाणी में उपलब्ध बौद्ध तत्वों का अध्ययन हम बाद में करेंगे, पहले यह देखना जरूरी है कि बौद्ध धर्म समय की शिला पर घिसता हुआ तथा ब्राह्मण धर्म के क्रूर खूनी पंजों से लुटता–पिटता किस रूप में गुरु रविदास जी तक पहुंचा। आइए देखते हैं इतिहास के झरोखे से।

भद्रशील रावत जी लिखते हैं कि "भारत का इतिहास बताता है कि श्रमण संस्कृति के पुरोधा महावीर स्वामी और भगवान बुद्ध के सामने त्याग–तपस्या के क्षेत्र में सभी ब्राह्मण संस्कृति के अनुयायी बौने साबित हुए हैं। देश, काल एवं परिस्थिति के अनुसार बौद्ध धर्म हीनयान एवं महायान में विभाजित हुआ। आगे चलकर महायान भी वज्रयान, मंत्रयान एवं सहजयान में विभाजित हुआ। सहजयान के पुरोधा चौरासी सिद्ध थे, जिनका समय 7वीं शताब्दी से 12वीं शताब्दी तक रहा। इन सिद्धों ने काफी परिवर्तन के साथ बौद्ध धर्म का ही प्रचार किया। महास्थविर नागार्जुन का शून्यवाद ही इनके लिए स्वीकार्य हुआ। अतः 14वीं–15वीं शताब्दी में बौद्ध धर्म का प्रत्यक्ष रूप से लोप था, लेकिन सिद्धों एवं नाथों के द्वारा यह धर्म जनता में मौजूद था।"

600 ईसा पूर्व से 500 ईसा पूर्व तक बौद्ध धर्म पूरे भारतीय संघ में अपनी जड़ें जमा चुका था। 500 ईसा पूर्व के बाद बौद्ध धर्म भारत की सीमाओं को पार करके पूरे एशिया महाद्वीप में अपने पांव पसार चुका था। ईसा पूर्व तीसरी शताब्दी में तो यह महान धर्म एशिया महाद्वीप को लांघ कर यूरोप की सीमाओं तक पहुंच गया। सम्राट अशोक द्वारा भेजी गई बौद्व भिक्खुणियां ग्रीस, इंग्लैंड, फ्रांस, स्पेन व इटली तक पहुंच चुकी थी। यरूसलेम से 30 किलोमीटर दूर खिरब्रेत कुमराज स्थान पर अशोक कालीन बौद्ध विहार प्राप्त हो चुका है। इन सब बातों के प्रमाण इतिहास के पाताल से खोजे जा चुके हैं।

इधर भारत में बौद्ध धर्म पर अपनी ऐतिहासिक दृष्टि डालते हुए श्याम सिंह जी 'संत रैदास की मूल विचारधारा' पुस्तक में लिखते हैं कि –

"600 ईसवी पूर्व से 150 ईसवी पूर्व तक लगभग 450 वर्ष तक बौद्ध धर्म का स्वरूप व्यवहारिकता में ज्यों का त्यों बना रहा। मौर्य साम्राज्य की समाप्ति के कुछ काल के बाद बाहर के लोगों का आना शुरू होता है। ग्रीक, बैक्ट्रीयन, पार्थियन, शुंग व कुषाण आदि एक के बाद एक आते गए और भारत में बसते गए। बाहर से आने वाले लोगों के अपने कुछ विश्वास थे, मर्यादाएं थीं, प्रथाएं थीं। इनमें से अधिकांश बौद्ध होने लगे, लेकिन विश्वास में भेद था, क्योंकि देश काल व परिस्थिति का अंतर मिलता है। बाहर से आने वाले लोग किसी न किसी देवता को जीवन में आदर्श मान रहे थे। इन लोगों ने जो सर्वोच्च से सर्वोच्च स्थान दिया, वह देवता को दिया हुआ है। ... इस प्रकार 150 ईसा पूर्व से 150 ईसवी तक लगभग 300 वर्ष तक विकास की प्रक्रिया चलती रही। जिसके कारण उसके (बौद्ध धर्म) के स्वरूप में कुछ परिवर्तन दिखलाई पड़े। पुरावेत्ता राम प्रसाद चंदा ने पुरातत्व के आधार पर परिवर्तन की प्रक्रिया को उजागर किया। जिसका कारण दो समाजों का मिलना रहा। 300 वर्ष तक विकास की सतत प्रक्रिया ने बौद्ध धर्म को एक नया स्वरूप प्रदान किया। 600 ईसवी पूर्व से 150 ईसवी तक 750 वर्ष की यात्रा करने के बाद जो विकास धर्म ने किया वह विकसित स्वरूप महायान के नाम से बौद्ध जगत में जाना गया। इस प्रकार हीनयान व महायान दो रूप सामने आए। ... महायान में बहुत से देवता प्रवेश करते चले गए। इससे यह सिद्ध होता है कि समाज की वे छोटी–छोटी इकाइयां जो ट्राइबल ;ज्तपइंसद्ध स्तर पर थीं, जिनमें देवता आदर्श था, बौद्ध धर्म में सम्मिलित होती चल गई, क्योंकि यह एक व्यापक धर्म था। जब बड़े धर्म में छोटे–छोटे धर्म सम्मिलित होने लगते हैं, तो धीरे–धीरे परिवर्तन आने लगता है। अतः गौतम बुद्ध की पूजा होने लगी। देश की चारों दिशाओं में साक्षी के रूप में प्राप्त बौद्ध संस्कृति के अवशेष की मात्रा इतनी अधिक है कि वह विद्वान व इतिहासकार को यह मानने के लिए बाध्य करती है कि गुप्त साम्राज्य की स्थापना (चौथी सदी) तक भी बौद्ध धर्म ही जनमानस का धर्म रहा। ...

गुप्त साम्राज्य की स्थापना के बाद महायान में परिवर्तन की प्रक्रिया पुनः शुरू होती है। ऐसा पांचवीं शताब्दी में दिखलाई पड़ता है। यह (बौद्ध धर्म) आगे चलकर वज्रयान, मंत्रयान व सहजयान के नाम पर जाना गया। असंगकाल (चौथी–पांचवी ईसवी) में रहस्यवाद जन्म लेता है। ... आद्य आचार्य के अनुसार तांत्रिक तत्व लगभग छठी शताब्दी के पूर्व महायान मे प्रविष्ट हो चुके थे। .... कुछ विद्वान वज्रयान की शुरुआत 8वीं शताब्दी मानते हैं। .... यह परिवर्तन होने पर भी वज्रयान बौद्ध धर्म है। .... वंदना के स्वरूप में कुछ परिवर्तन दिखलाई पड़ता है, लेकिन हर स्थिति में बुद्ध उनका रास्ता था, उनका गुरु था। ..... वज्रयान ही आगे चलकर सहजयान के नाम से जाना जाने लगा। इनका मूल बौद्ध धर्म है। ..... यह परंपरा बंगाल व बिहार में सहजिया संप्रदाय के रूप में 15वीं–16वीं शताब्दी तक रहती है। ..... नाथपंथी सिद्ध संप्रदाय के साथ–साथ मिलते हैं। .... नाथ संप्रदाय में गौतम बुद्ध को आदिनाथ और शिव कहा गया। आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने कहा है कि गोरखनाथ का मूल भी बौद्ध धर्म था। ...इस संबंध में सारानाथ संग्रहालय में रखी 11वीं सदी की पत्थर से बनी गौतम बुद्ध की मूर्ति को देखा जा सकता है। गौतम बुद्ध को शिव में बदलने का यह प्रत्यक्ष प्रमाण है। जो ऊपर से शिव जैसी और शेष बुद्ध के रूप में है। ..... 14वीं–15वीं शताब्दी तक सिद्ध संप्रदाय व नाथ पंथ चले आते हैं। .... सिद्धों व नाथों की अनुभूतियों व ज्ञान का सीधा संबंध निर्गुण संत व उनके साहित्य से है। अर्थात जिस ज्ञान व सामाजिक चिंतन को सिद्ध व नाथ एक के बाद एक 14वीं–15वीं शताब्दी तक आगे बढ़ाते रहे, उसे अब निर्गुण संत, विशेष रूप से रैदास व कबीर ने आगे बढ़ाया। .... इस प्रकार बौद्ध धर्म संत रैदास व कबीर साहेब को नाथों व सिद्धों से विरासत के रूप में प्राप्त होता है।.... डॉ. एल.बी. राम अनंत का मत है कि संत रैदास सहजिया संप्रदाय के विद्वान हैं।"

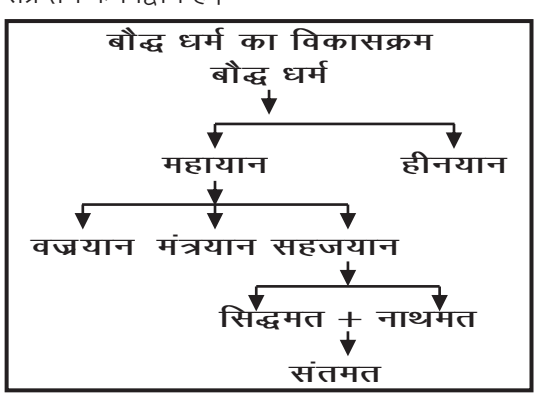

बुद्ध का धर्म संतों तक कैसे पहुंचा ? इस विषय में कंवल भारती जी एक दूसरा ही बड़ा रोचक एवं मान्य अध्ययन प्रस्तुत करते हैं। उनके अनुसार – जब पुष्यमित्र जैसे पुरोहितशाही राजाओं ने भारत से बौद्ध धर्म को खदेड़ने का अभियान चलाया और बौद्ध भिक्खुओं का कत्लेआम शुरू किया तो जो संपन्न भिक्खु थे, वे भागकर पड़ोसी देशों में चले गए, किंतु बहुत से भिक्खु जो संपन्न नहीं थे, दीन–हीन थे और भागने में असमर्थ थे, गांवों में गृहस्थ वेष में रहने लगे थे। उन्होंने चीवर त्याग दिया था, सिर पर बाल रखने आरंभ कर दिए थे। धीरे–धीरे साधारण नागरिकों की तरह उन्होंने विवाह भी कर लिए थे। चूंकि वर्णाश्रम के कारण ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्य उन्हें अपने वर्णों में सम्मिलित नहीं कर सकते थे। अतः दलित जातियों में सम्मिलित होने के अलावा कोई अन्य रास्ता उनके पास था ही नहीं। इन प्रच्छन्न बौद्धों ने दलित वर्गों में रहकर भी बुद्ध धर्म के प्रति आस्था को समाप्त नहीं किया था। बुद्ध के आकार की चौतरी बनाकर वे घरों में ही पूजा–अर्चना करते रहे, जिसका विकृत रूप आज भी उत्तर भारत के दलित घरों में मौजूद है। साथ ही इस डर से कि वे पहचान न लिए जाएं, उन्होंने अपनी प्रत्येक कार्य विधि और अभिव्यक्ति को हिंदू रंग में रंग लिया था। चूंकि मुस्लिम शासक भी बौद्धो के शत्रु थे, इसलिए उन्होंने राम के साथ रहीम तथा वेद के साथ कुरान को भी अपना लिया था और अपने काव्य को ऐसा रूप दे दिया था कि उसमें हिंदुओं का भक्ति योग भी था और इस्लाम का एकेश्वरवाद भी दिखाई दे सकता था। किंतु उनके काव्य का मूलाधार बुद्ध का दर्शन ही था, जिसे उन्होंने हिंदू रंग में डूबोकर इस अंदाज में प्रस्तुत किया था कि उसमें बुद्ध का ज्ञान, प्रेम का निझर बनकर फूट पड़ा था। इस प्रेम की विशेषता यह है कि बुद्ध के विरोधी भी उसे अस्वीकार करने का साहस नहीं कर सके। किंतु दलित जीवन कितना कटु एवं पीड़ादायक है, इस यथार्थ को उन्होंने पहली बार ही भोगा था। अतः सामाजिक विषमता और अस्पृश्यता के असहनीय अभिशाप के विरुद्ध उनकी अनुभूतियां विद्रोही हो गईं। उन्होंने दलित जातियों में क्रांति चेतना उत्पन्न करने के उद्देश्य से बुद्ध के दर्शन को विकसित करने की आवश्यकता महसूस की, किंतु बौद्ध धर्म को मूल रूप में प्रतिष्ठित करना तत्कालीन शासन सत्ता में खतरे से खाली नहीं था। इसलिए उन्होंने बुद्ध के दर्शन के अंतर्गत सर्वप्रथम दलित जातियों को स्वतंत्रता और समानता का बोध कराया तथा उनमें स्वाभिमान उत्पन्न किया।

इन्हीं प्रच्छन्न बौद्धों की परंपरा में आगे चलकर कबीर साहेब, रैदास साहेब, चोखा मेला साहेब, सैना साहेब, पीपा साहेब और क्रांतिकारी संत दलित जातियों में पैदा हुए। इन संतों के चिंतन और आचरण दोनों पर ही बुद्ध धर्म का प्रभाव था, लेकिन बुद्ध के अनिश्वरवाद के सिद्धांत के कारण हिन्दू और मुस्लिम दोनों ही बौद्ध धर्म को जीवित देखना नहीं चाहते थे। दलित संतों की समस्या अनीश्वरवाद को सुरक्षित रखने की थी। वे उसे ऐसा रूप देना चाहते थे, जिससे की उसकी मूल भावना भी विद्यमान रहे और शत्रु पक्ष उसकी अर्थवत्ता को समझ भी न सके। अतः वे छद्म ईश्वरवादी हुए। उन्होंने इस परमात्मा को हरि, राम, कृष्ण, रहीम, अल्लाह आदि नामों से पुकारा सिर्फ इसलिए कि तत्कालीन समाज उनकी पहचान नास्तिक रूप में न कर सके। क्योंकि नास्तिक अथवा ईश्वर से इंकार करने वाले ब्राह्मणों के ही दुश्मन नहीं थे, अपितु मुसलमानों को भी दुश्मन थे। गूढ़ अर्थों में उनका निर्गुणवाद बौद्धों के शून्यवाद पर आधारित था जो अनीश्वरवाद का ही दूसरा रूप है।

रविदास वाणी और बौद्ध धर्म

अब तक के अध्ययन में हमने देखा कि किस तरह से बौद्ध धर्म के विकास की प्रक्रिया समय रूपी शिला पर घिसते–घिसते सिद्धों व नाथों से गुरु रविदास जी को प्राप्त हुई। जब हम गुरुजी की वाणी को सामने रखकर उसका विश्लेषण करते हैं, तब पाते हैं कि उन्होंने हूबहू बौद्ध दर्शन को ही आम बोल–चाल की भाषा में आम जनता में प्रचारित किया।

इस विषय में ओशों रजनीश लिखते हैं, ''इसलिए रैदास को मैं कहता हूँ, वे भारत के संतों से भरे आकाश में ध्रुवतारा हैं। उनके वचनों को समझने की कोशिशें करना रैदास इसलिए भी स्मरणीय हैं कि रैदास ने वही कहा है, जो बुद्ध ने कहा है। लेकिन बुद्ध की भाषा ज्ञानी की भाषा है, रैदास की भाषा भक्त

की भाषा है, प्रेम की भाषा है। ... रैदास ने फिर बुद्ध की बातें ही कही हैं पुनः, लेकिन भाषा बदल दी, नया रंग डाला। पात्र वही था, बात वही थी, शराब वही थी – नई बोतल दी .... ।

रैदास चमार हैं। जैसे किसी गहन अंतस्थल में बुद्ध अब भी गूंज रहे हैं। वही आग। लेकिन रैदास ने उस आग को आग नहीं बनने दिया, उस आग को रोशनी बना लिया।''

डॉ. विद्यावती मालविका जी ने अपने शेध ग्रंथ 'हिन्दी संत साहित्य पर बौद्ध धर्म का प्रभाव' में बौद्ध धर्म और साध संप्रदाय का तुलनात्मक अध्ययन प्रस्तुत किया हैं भगवान बुद्ध द्वारा प्रतिपादित पंचशील की तुलना उन्होंने साध संप्रदाय के सिद्धांतों से निम्न प्रकार से की है–

बौद्ध धर्म	साध संप्रदाय
1. जीव हिंसा से विरत रहो	1. जीव हिंसा न करो
2. बिना दी हुई किसी वस्तु को ग्रहण करने से विरत रहो	2. किसी भी वस्तु के लिए लालच न करो
3. कामभोगों में मिथ्याचार से विरत रहो	3. एक पत्नी तथा एक पति का व्रत ग्रहण करो
4. असत्य भाषा से विरत रहो	4. कभी असत्य न बोलों
5. मादक द्रव्यों का व्यवहार न करो	5. शराब आदि मादक द्रव्यों से विरत रहो

पंचशील सिद्धांत और गुरु रविदास वाणी

ऊपर उल्लेख किए गए पंचशील सिद्धांतों का रविदास जी की वाणी में अथाह सागर उमड़ रहा है।

पहला सिद्धांत

पंचशील सिद्धांतों में पहला सिद्धांत जीव हिंसा से विरत रहने का है। इसका समर्थन करते हुए रविदास जी कहते हैं कि –

'रविदास' जीव कूं मारि कर, कैसों मिलिहिं खुदाय
पीर पैगम्बर औलिया, कोउ न कहइ समुझाय
'रविदास' मूंडह काटि करि, मूरख कहत हलाल
गला कटावहु अपना, तऊ का होइहि हाल
प्राणी बध नहिं कीजियहि, जीवह ब्रह्म समान
'रविदास' पाप नहं छूटइ, करोर गउन करि दान
'रविदास' जीव मत मारहिं, इक साहिब सभ मांहि
सभ मांहि एकउ आत्मा, दूसरह कोउ नांहि

दूसरा सिद्धान्त

पंचशील का दूसरा सिद्धांत बिना दी हुई किसी वस्तु के ग्रहण करने से विरत रहने का है। गुरु जी इस सिद्धांत का जोरदार समर्थन करते हैं। वे मेहनत की कमाई पर जीवन–यापन के पक्षधर हैं–

'रविदास' स्रम करि खाइहि, जौ लौ पार बसाय
नेक कमाई जउ करइ, कवहूं न निहफल जाय
स्रम कउ ईसर जानि कै, जउ पूजहि दिन रैन
''रविदास' तिन्हहि संसार मंह, सदा मिलहि सुख चैन
'रविदास' हौं निज हत्थहिं, राखौ रांबी आर
सुकिरित ही मम धरम है, तारैगा भव पार
प्रभ भगति स्रम साधना, जब मंह जिन्हहि पास
तिन्हहि जीवन सफल भयो, सत्त भाषै 'रविदास'

तीसरा सिद्धांत

काम भोगों के मिथ्याचार से विरत रहने की शिक्षा गुरु रविदास जी एक पपीहे के प्रतीक द्वारा बड़े सुंदर शब्दों में देते हैं–

ऐक अभिमानी चात्रिगा, विचरत जग मांही ।
जदपि जल पूरण मही, कहूँ वा रूचि नाहीं।।
जैसे कामी देषै कामिनी, रिदै सूल उपाई।
कोटि बैद बिध उपचरै, बाकी बिथा न जाई।।
जो जिहिं चाहे सो मिलै, आरति गति होई।
कहै 'रविदास' यहु गोपि, नाहीं जानै सब कोई।।

अर्थात स्वाति का जल पीने की अपनी जिद पर अड़ा पपीहा संसार भर में विचरता है। यद्यपि धरती जल से भरी हुई है। फिर भी उस पपीहे की रुचि उसमें नहीं है। ठीक उसी प्रकार कामी के हृदय में कामिनी को देखकर जो प्रेम की पीड़ा उभरती है, वह करोड़ों वैद्यों के अनेकानेक उपचार से भी दूर नहीं होती ।

एक अन्य स्थान पर वे लिखते हैं–

''काम क्रोध में जन्म गंवायौ, साध संगति मिलि राम न गायो''

चौथा सिद्धान्त

असत्य भाषा से विरत रहने के चौथे पंचशील सिद्धांत को रविदास जी समर्थन देते हुए कहते हैं–

''रविदास सत्त मति न तिआगिए, जौ लौं घट मंहि प्रान
सत्त भ्रिस्ट करि जगत मंहि, सदा होत अपमान
जिन्ह नर सत्त तिआगिया, तिन्ह जीवन मिरत समान
रविदास सोई जीवन भला, जहं सभ सत्त प्रधान

पांचवां सिद्धान्त

पंचशील का पांचवां सिद्धान्त है मादक द्रव्यों से विरत रहना। रविदास जी ने इसकी जोरदार वकालत की हैं वे बार–बार कहते हैं–

''सुरसरी सलल कृत बारूनी रे संत जन करत नहीं पान''

अर्थात् यदि शराब गंगाजल से भी बनाई गई हो, तब भी संत जन उसे नहीं पीते।

'रविदास' मदुरा का पीजियै, जो चढ़ै–चढ़ै उतराय।
नांव महारस पीजियै, जौ चढ़ै नाहि उतराय।।

अर्थात् रविदास जी कहते हैं कि उस शराब का पीना भी क्या पीना, जिसका नशा एक बार चढ़ने पर उतर जाता है और उसे बार–बार पीना पड़ता है। पीना ही है, तो सतनाम रूपी महारस को पीना चाहिए। जिसका नशा एक बार चढ़ने के बाद फिर कभी नहीं उतरता।

मोटे तौर पर हमने देखा कि बुद्ध द्वारा पांचशील के सिद्धांतों का गुरु रविदास जी ने खूब प्रचार–प्रसार किया है। अगले पृष्ठों में हम बौद्ध धर्म के अन्य मुख्य सिद्धांतों आदि का गुरु रविदास की वाणी से तुलनात्मक अध्ययन करेंगे।

सिद्धों का वज्र (मणि) गुरुजी का हीरा

डॉक्टर धर्मवीर भारती जी अपने शोध्र प्रबंध 'सिद्ध साहित्य' में लिखते हैं कि ''सिद्धाचार्यों द्वारा अभिसित वज्र या मणि के उस अर्थ को तो संत भूल चुके थे, किंतु सहज पद्धति के साथ चित्त को मणि अथवा हीरा बनाने की प्रक्रिया उनकी परंपरा में अवस्थित रह गई थी। रविदास जी के शब्दों में–

पीवत डोलत फूल फल अमृत सहज भई मति हीरा

एक अन्य स्थान पर तो वे हरि भी हीरा के रूप में चित्रित करते हैं–

हरि सो हीरा छाड़ि के, करे आन की आस।
वो नर दोजख जाएंगे, सत भाषै रविदास।।

एक अन्य स्थान पर गुरुजी लिखते हैं–

ताउ हीरा हाथ परै।

सिद्धों की वज्र (मणि) को गुरु जी एक स्थान पर पारस मणि भी कहते हैं–

परसु परसै दुबिधा न होई

गुरु रविदास जी का सत्तनाम

डॉ. विद्यावती मालविका अपने शोधग्रंथ 'हिंदी संत साहित्य पर बौद्ध धर्म का प्रभाव' में लिखती हैं कि कबीर ने जिसे सतनाम कहा है और सतगुरु से प्राप्त महौषधि माना है, जिसका स्मरण करना परमावश्यक है, क्योंकि उसी के स्मरण से परमपद की प्राप्ति होगी। वह सत्तनाम पालि भाषा के 'सच्चनाम' का रूपांतर है। पालि भाषा में 'सच्चनाम' का प्रयोग भगवान बुद्ध के लिए हुआ है। अंगुत्तर निकाय के चार सूत्रों की गाथाओं में बार–बार 'सच्चनाम' को दुहराया गया है–

'अक्खाता सच्चनामेन उभयत्थ सुखावहा''

अर्थात् सच्चनाम (सत्तनाम) ने इन्हें दोनों लोकों के लिए सुखदायक कहा है। ऐसे ही बुद्ध के लिए पालि ग्रंथो में सच्चनिकम्मो (सत्यवादी), सच्चह्वयो (सत्यनाम वाले) सच्चवादी (सत्यवादी) आदि शब्दों का व्यवहार हुआ है। मज्झिम निकाय के इसिगिल सुत्त में 'सत्यनाम' से एक प्रत्येक बुद्ध का भी उल्लेख मिलता है। इससे स्पष्ट है कि सच्चनाम वाले भगवान बुद्ध ही कबीर के सत्तनाम हो गए हैं।''

डॉ. मालविका जी ने पालि के सच्चनाम का अध्ययन कबीर जी पर किया है, लेकिन यह शब्द हम नानक से लेकर रविदास तक हर निर्गुणियां संतों के साहित्य में उपलब्ध पाते हैं।

रविदास जी की वाणी में इसका खूब प्रयोग हुआ है–

इड़ा पिंगला सुसुम्णा, बिध चक्र प्रणयाम।
रविदास हौं सबहि छांड़ियो, जबहि पाइहू सत्तनाम।।
इक चिंता सतनाम की, दरसाइहु परम तत्त।
सहज परम भक्ति भई, 'रविदास' पाइहि ब्रह्म सत्त।।
''कहै 'रविदास' नामु तेरो आरती, सतिनामु है हरि भोग तुहारे।।''
अंतर्मुखी भइ जउ करहिं, सत्तनाम करि जाप।
रविदास तिन्ह सौं भजहुहिं, जगतह तीन्हहु ताप।।
'रविदास' अराधहु देवकूं, इकमल हुई धरि ध्यान ।
अजपा जाप जपत रहहु, सत्तनाम सत्तनाम।।

यहाँ यह बात भी स्पष्ट कर देना चाहता हूँ कि गुरु रविदास जी ने सतनाम के साथ ही कहीं–कहीं 'सत्तराम' का भी उल्लेख किया है, जैसे –

भाई रे! राम कहां माहि बताओ 'सत्तराम', ताके निकट न आओ।
मन रैदास उदास ताहि ते करता जग बिसराई।
केवल करता एक सही सिर, 'सत्तराम तेहि नाईं ।।

इस 'सत्तराम' का विश्लेषण प्रसिद्ध विद्वान भद्रशील रावत जी ने बहुत स्पष्ट शब्दों में किया है, ''और यह भी सत्य है कि यह 'सत्यराम' ही रूपांतरित होकर 'सत्यनाम' हो गया है।''

वास्तव में यहाँ पर गुरु रविदास जी ने 'सत्तराम' जी का उल्लेख किया है। वह ब्राह्मणों के वर्णाश्रमी राम के मुकाबले का अविनाशी राम (सत्तराम) है। क्योंकि अयोध्यावासी राम तो जन्म–मरण के चक्र में पिसता हुआ राम है, वह अविनाशी राम नहीं है–

राम कहत सब जग भुलाना।
सो यह राम न होई।।
''रविदास हमारो राम जी दशरथ करि सुत नांहि।'' नाम महिमा

गुरु रविदास जी ने नाम की बड़ी महिमा गाई है। इस नाम महिमा का उल्लेख बौद्धों ने भी खूब किया है। बुद्धघोष द्वारा लिखित 'विशुद्धि मार्ग' के अठारहवें अध्याय में नाम महिमा का निर्देशन देखा जा सकता है।

''नाम मूल हे ग्यान कौ, नाम मुक्ति कौ दवार''
''सोइ तन कंचन जानइ, जिह तन नाम परगास।''
''रविदास सत्त इक नाम है, आदि अंत सचु नाम'',
''जनम मरनु अरु जग जाला, नाम परताप न बिआपहि ब्याला।''
''भौ सागर रा तरन कूं, एकौ नाम अधार''
नामु तेरो आरती मजुन मुरारे।
हरि के नाम बिनु झूठे सगल पसारे।।
नामु तेरे आसनो नामु तेरो उरसा, नाम तेरो केसरो ले छिटकारे।
नामु तेरो अंभुला नामु तेरो चंदनो,
घसि जपै नामु ले तुझहि कउ चारे
नामु तेरो दीवा नामु तेरो बाती नामु तेरो तेलु ले माहि पसारे।
नाम तेरे की जोति लगाई, भइओ उजियारों भवन सगलारे
नाम तेरे तागा नाम फूल माला भार अठारह सगल जुठारे
तेरो कीआ तुझहि किआ अरपउ,
नामु तेरा तुही चवर ढोलारे।।
दसअठा अठसठे चारे खाणी, इहै वरतणि है सगल संसारे
कहै रविदासु नामु तेरो आरती, सतिनामु है हरि भोग तुहारे।

अर्थात् हे प्रभु मेरे लिए तो तुम्हारा नाम ही आरती और तीर्थ स्थान है। तुम्हारें नाम के बिना पूजा–पाठ के सभी बहिर्मुखी विस्तार झूठे आडंबर हैं। तुम्हारा नाम ही मेरे लिए आसन है। तुम्हारा नाम ही केसर रगड़ने की सिल है तथा नाम रूपी केसर को लेकर

ही मैं तुम्हारें ऊपर छिड़कता हूँ। तुम्हारा नाम ही मेरे लिए पानी है, नाम ही चंदन है तथा नाम सुमिरन द्वारा ही मैं नाम रूपी चंदन को घिसकर तुम्हें लगाता हूँ। तुम्हारा नाम ही मेरे लिए दीपक, नाम ही बाती है और नाम ही तेल है। जब मैंने तुम्हारें नाम की ज्योति जलाई तक मेरे अंदर के भवन में उजियारा छा गया। तुम्हारा नाम ही मेरे लिए धागा है, नाम ही फूलमाला है। अतः पत्थर की मूर्तियों पर चढ़ाई जाने वाली अट्ठारह भार की माला झूठी है। अठ्ठारह पुराणों तथा अड़सठ तीर्थों में उलझा समस्त संसार चार प्रकार की योनियों में चक्कर लगा रहा है। रविदास जी कहते हैं कि हे प्रभु तुम्हारा नाम ही मेरे लिए आरती है और मैं सच्चे नाम (सत्तनाम) का ही भोग तुम्हें अर्पित करता हूँ।

सहज समाधी

सिद्ध आचार्यों के सहज समाधि, सन्न अदि का वर्णन जब हम गुरुजी की वाणी में पढ़ते हैं, तब हम इस नतीजे पर पहुँचते हैं कि गुरुजी सहजयानी बौद्ध थे। इसी संबंध में प्रो. एच.सी. जोशी (एच.सी. बौद्ध) जी लिखते हैं–

''गुरु (रैदास जी) की अष्टांग साधना बौद्ध धर्म के आर्य आष्टांगिक मार्ग का ही प्रतिरूप है। निर्वाण सहज शून्य, सहज समाधि, तज्र हठयोग, उल्टी साधना, अनित्य अशुभ आदि की भावना, परमतत्व आदि गुरुजी पर पड़े बौद्ध प्रभाव के द्योतक है। रविदास जी का सहज शून्य बौद्ध धर्म का निर्वाण ही है।'' गुरुजी की वाणी से कुछ उदाहरण देखे जा सकते हैं–

''कहत रैदास सहज सुन्न संत''
''बिन सहज सिद्ध न होय''
मन ही पूजा मन ही धूप
मन ही सेऊ सहज सरूप
सहज सुन्न में भाठी सखै, पीवै रैदास
गुरुमुख दखै
बट का बीज जैसा आकाश, पसरयो तीन लोक पसारा
जहां का उपजा तहां बिलाई, सहज सुन्नि में रह्यो लुकाई
पहलै ग्यान का किया चांदिना, पीछै दीया बुझाई।
सूंनि सहज मैं दोऊ त्यागै, राम कहौं न खुदाई।।
''सहज परम भक्ति भई''
चलत–चलत मेरो मन थाकयो, अब मो पै चल्यो न जाई।
सोई सहजि मिल्यौ सोई सनमुख, कहै रविदास बड़ाई।।
''गुरु की सारि ज्ञान का अच्छर।
बिसरै तो सहज समाधि लगाऊं।।''
''सुन्न मंडल में मेरा वास''
''कह रविदास निरंजन ध्याऊं''
''सहज–समाधि उपाधि रहत फुनि''

इसी सहज सुन्न को नाथ संप्रदाय के गुरु गोरखनाथ जी ने अपने ग्रंथ 'सबदी' में लिखा है–

''बसती न सून्यं सून्यं न बसती अगम अगोचर ऐसा''

ब्राह्मणों की पोप लीला का विरोध

गुरु रविदास जी ने अपनी निर्भीक वाणी द्वारा ब्राह्मणों के खूनी महल की नींव हिला कर रख दी थी (देखें अध्याय धर्म के ठेकेदारों से ठन गई)। उनसे पहले बौद्धों ने भी ब्राह्मणों की पोप लीला की कसकर खबर ली थी।

आचार्य अश्वघोष जैसे बौद्ध दार्शिनिक तो यहाँ तक लिखते हैं, ''यदि ब्राह्मण की उत्पत्ति ब्रह्मा के मुख से हुई है, तो ब्राह्मणी की उत्पत्ति कहां से हुई? निश्चय ही ब्रह्मा के मुख से। यदि ऐसा ही है, तो वह ब्राह्मण की बहन हुई। इस तरह के संबंध लोकाचार के विरुद्ध हैं।''

बौद्ध दार्शनिक आचार्य धर्मकीर्ति जी ब्राह्मणों की पोपलीला पर करारा प्रहार करते हुए कहते हैं–

वेद प्रामाण्यं कस्यचित् कार्तृवादः स्नाने धर्मेच्छा जातिवादालेपः।
संतापारंभः पापहानाय चेति ध्वस्त प्राानांलिंगानि पंचजाड्ये।।

''वेद (ग्रंथ) की प्रमाणिकता, किसी (ईश्वर) का (सृष्टि), कर्त्तावाद, स्नान (करने) में धर्म (होने) की इच्छा रखना, जातिवाद का घमंड और पाप दूर करने के लिए (शरीर को) संताप देना, उपवास आदि करना। ये पांच अकल के मारे लोगों की मुर्खता की निशानियाँ हैं।''

हालांकि पूरा बौद्ध दर्शन ही ब्राह्मणवाद के खिलाफ एक खुला विद्रोह है। यहाँ उसकी एक झलक ही काफी है।

धम्मपद में भगवान बुद्ध कहते हैं–

न चाहं ब्राह्मणं ब्रूमि योनिजं मत्ति सम्भवों।
'भोवादी' नाम सो होति स चे होति सकिंचनो।
अकिंचनं अनादानं तमहं ब्रमि ब्राह्मणं।
धम्मपद–396

आर्थात् माता की योनि से पैदा होने के कारण में किसी को ब्राह्मण नहीं कहता। यदि वह धन से संपन्न हैं, तो वह भोगवादी है। जो परिग्रही है और त्यागी है, उसे ही मैं ब्राह्मण कहता हूँ।

न जटाहि न गोत्तेहि न जच्चा होति ब्राह्मणों।
यम्हि सच्चंच धम्मों व सो सुची सो ब्राह्मणो।।
धम्मपद–393

अर्थात् न तो कोई ब्राह्मण इसलिए ब्राह्मण होता है कि उसने जटाएं बढ़ा ली हैं। न इसलिए कि उसका गोत्र ऊंचा है। न इसलिए कि उसने नारी की कोख से जन्म लिया है। किसी को तभी ब्राह्मण कहा जा सकता है, जिसमें सत्यता हो और धार्मिकता हो। वही पवित्र है और वही ब्राह्मण है।

मन नियंत्रण

बौद्ध परंपरा में सभी आचार्यों ने मन के नियंत्रण पर जोर दिया है। इस मन को साधे बिना कुछ भी प्राप्त नही हो सकता। धम्मपद की एक गाथा है–

नही हो सकता। धम्मपद की एक गाथा है–

मनो पुब्बंगमा धम्मा मनों सेठ्ठा मनोमया।
मनसा चे पदुठ्ठेन भासति वा करोति वा,
ततो नं दुक्खमन्वेति चक्कं' व वहतो पदं।।
धम्मपद –1

अर्थात् मन सभी प्रवृत्तियों का अगुआ है, मन उनका प्रधान है, वे मन से ही उत्पन्न होती हैं। यदि कोई दूषित मन से वचन बोलता है या काम करता है, तो दुख उसका अनुसरण उसी प्रकार करता है, जिस प्रकार की चक्का गाड़ी खींचने वाले बैलों के पैरों का।

गुरु रविदास जी ने भी मन के नियंत्रण का वर्णन बौद्धों की ही विचाराधारा के अनुरूप किया है–

मन मेरो थिरु न रहाई
कहि रविदास मन थिरु हैसी, चलि सब छांड़ी गुरु सरणाई।।
''रेचित! चेति चेत अचेत''
''मन ही पूजा मन ही धूप, मन ही सेऊ सहज सरूप''
''जब मन मिल्यो, आस नहि तन की''
''मन चंगा तो कठौती में गंगा''

गुरु महिमा

गुरु की महिमा का गान वज्रयानी बौद्धों ने खूब गाया है। वज्राचार्य इंद्रभूति जी के श्ब्दों में ''जिस साधक के ऊपर गुरुजी की कृपा रहती है, वही उत्तम तत्त्व की प्राप्ति करता है, अन्यथा चिरकाल तक मूड़ रह कर क्लेश पाता है। गुरु (रास्ता) ही बौद्ध धर्म और संघ है। उसी की कृपा से रत्नत्रय का ज्ञान प्राप्त होता है। अज्ञान के तिमिरांधों के लिए वह मार्ग प्रदर्शक है। सभी आनंदों का आश्रय है। सभी प्रकार की इच्छाओं को पूर्ण करने वाला है। उसके समान और पूजनीय और महामुनि नहीं है। इसी लिए सभी प्रकार के प्रयत्न कर व्रती को गुरु की पूजा करनी चाहिए।'' (टू वज्रयान वर्क्स संकलन–डॉ. विनयघोष भट्टाचार्य, श्लोक–23–26, पृष्ठ 33)

इस विषय पर नगेंद्रनाथ उपाध्याय जी लिखते हैं कि ''गुरु पद ही बुद्ध पद है।... वज्रयानी ग्रंथों में गुरु को बुद्ध के समान पद दिया गया है। प्राचीन बौद्ध साहित्य में भी गुरु को रास्ता कहा गया, जिसका अर्थ गुरु होता है।''

अपने पूर्ववर्ती बौद्धों से प्रेरणा लेते हुए गुरु रविदास जी ने भी गुरु की खूब महिमा गाई है। वे कहते हैं–

''संत अनंतहि अंतर नाहिं''
हरि गुर साध समान चित, नित आगम तत मूल।
इन बिच अंतर जिन परौ, करवत सहन कबूल।।

अर्थात् परमात्मा, सतगुरु और साधु–संतों का ह्रदय एक समान होता है। यही शास्त्रों (बौद्ध ग्रंथो) का मूल तत्त्व है। इनके बीच कोई फर्क नहीं समझना चाहिए। इस सत्य का अनुसरण करने से यदि आरे से चीरे जाने की यातना भी सहनी पड़े तो उसे सहर्ष स्वीकार करना चाहिए।

अन्य स्थानों पर गुरु की महिमा रविदास जी ने इस प्रकार गाई है–

''गुरु ग्यानं दीपक दिया, बाती दई जलाय।''
''रविदास गुरु ग्यानं चाषु बिना, किमी मिटइ भ्रम फंद''
''रविदास गुरु रा ग्यांन बिनु, बिरला कौ बचि जाय''
''रविदास गुरु पतवार है, नाम नाव करि जान''
''कहि 'रविदास' मिल्यों गुर पूरौ, जिहि अंतर हरि मिलावै''
''सत गुर हमहु लषाई बाट''
''कहि रविदास गुरु राह दिषावह त्रिषा बुझि मिटि मन संताप।।''

''संत साहित्य पर बौद्ध धर्म का प्रभाव' नामक शोध ग्रंथ में डॉ. विद्यावती मालविका जी लिखती हैं–

''गुरुजी की वाणी में अलख निरंजन, शून्य, सहज–शून्य, सत्यनाम, घट–घट व्यापी, ब्रह्म निर्गुण तत्त्व, तपतीर्थ स्नान की निस्सारता, आवागमन, अवधूत, मूर्ति पूजा की व्यर्थता, सुरति (स्मृति) शील, अनित्य अशुभ परमपद, निर्वाण, सन्यास तथा वेष धारण की निरर्थकता, गुरु महिमा, सत्संग से परम पद की प्राप्ति, सतगुरु, नाम महिमा, जन्म जात श्रेष्ठता (जातियता) का निषेध, ग्रंथ प्रमाण का बहिष्कार आदि बौद्ध तत्त्व साधना एवं विचारों के समन्वय पाए जाते हैं।''

डॉ. मालविका जी का उपरोक्त अध्ययन सत्य की कसौटी पर खरा उतरता है, जब हम रविदास जी की वाणी का इसी दृष्टि से अवलोकन करते हैं। उदाहरण के तौर पर भगवान बुद्ध के विश्वविख्यात वचन ''बहुजन हिताय, बहुजन सुखाय'' का रविदास जी ने अपने शब्दों में कुछ यूं वर्णन किया है–

''संतन के मन होत है सबके हित की बात''

डॉ. हजारी प्रसाद द्विवेदी जी के शब्दों मे, ''यदि कबीर आदि निर्गुण मतवादी संतों की वाणियों की बाहरी रूप रेखा पर विचार किया जाए, तो मालूम होगा कि यह संपूर्णतः भारतीय है और बौद्ध धर्म के अंतिम सिद्धों और नाथपंथी योगियों से उनका सीधा संबंध है।''

गुरु रविदास जी भगवान बुद्ध के वारिस थे, इस विषय पर हमारे अब तक के अध्ययन के बाद कोई शंका शेष नहीं रह जानी चाहिए। अतः इस अध्ययन को मैं श्याम सिंह जी के शब्दों से ही समाप्त करना चाहूंगा। वे लिखते हैं, ''बौद्ध साधना को समझाने की जो पद्धति संत रैदास ने अपनाई, वह सिद्ध करती है कि विरासत के रूप में बौद्ध धर्म व नाम सिद्धों से उनको प्राप्त हुआ। जिस प्रकार नाथ व सिद्ध आचार्यों ने भगवान बुद्ध की शिक्षा को आगे बढ़ाया, संत रैदास जी ने उसको फैलाने में कोई कसर बाकी नही छोड़ी। यह स्थिति संत रैदास को सहजयान से जोड़ती है। इसलिए स्वतः उनका सीधा संबंध भगवान बुद्ध से जुड़ जाता है। संत रैदास सहजयान संप्रदाय के विद्वान थे, जो बौद्ध धर्म का परवर्ती रूप है।''

साभार :
गुरु रविदास की हत्या के प्रमाणिक दस्तावेज

राष्ट्र और राज्य

बहुराष्ट्रीयताओं के सवाल पर जब हम विचार करते हैं तो सबसे पहले बात आती है कि यह राष्ट्र क्या हैं? राष्ट्रीयता और राष्ट्रवाद क्या है? इस पर अनेक विद्वानों ने चर्चा की है। प्लेटो और अरस्तू ने इसे एक संस्था माना है। किंतु आदिम काल में कोई इस प्रकार की संस्था नहीं थी। मनुष्य कबीलों में बंटा हुआ था। लोगों को राष्ट्र और समाज का कोई ज्ञान नहीं था। उस समय आपसी हितों में कोई संघर्ष नहीं था। जब कृषि का विकास हुआ तो संपत्ति का रिवाज शुरू हुआ। जिनके पास काफी भू–संपत्ति थी वे स्वतः ही स्वामी बन गए और जो अर्जन नहीं कर सके वे स्वामी के खेतों और घरों में काम करने लगे, वे दास श्रमिक कहलाए। बाद में जो कृषि कर्म करने लगे वे कृषक तथा शिल्प करने वाले शिल्पी कहलाए। दास, स्वामी की संपत्ति कहलाते थे। दासों, शिल्पियों और कृषकों के बीच में श्रम, शोषण, मजदूरी, भुखमरी, उत्पीड़न, भूख–अकाल के समय स्वामी की संपत्ति आदि की लूट को लेकर संघर्ष शुरू हुए। स्वामी ने अपनी ओर से लड़ने के लिए लठैत तैयार किए, मामलों के फैसलों के लिए मुखिया और फिर दासों की बंदी के लिए बाड़े तैयार कराए। वहीं बाद में पुलिस, कारागार, न्यायालय, न्यायाधीश एवं राजा सामंत की उत्पत्ति हुई। शोषक और शोषित वर्ग का संबंध स्थापित हुआ और यही राज्य नामक संस्था का रूप लिया। इस प्रकार से राज्य नामक संस्था का निर्माण एक वर्ग द्वारा दूसरे वर्ग पर नियंत्रण रखने के लिए स्थापित हुआ। अतः राज्य एक वर्गीय संस्था है।

राष्ट्र का स्वरूप एक वर्गीय संस्था का है। अतः यह शोषक वर्ग के हितों की रक्षा के लिए सबसे बड़ा साधन है। सामंतीकाल में यह संस्था बड़े–बड़े सामंतों द्वारा श्रमिक, कृषक, शिल्पी वर्गों के शोषण का साधन बनी। आजकल पूंजीवादी युग में इसकी सहायता से पूंजीवादी श्रमिक, शिल्पी, कामगार, किसानों, दलितों और आदिवासियों का शोषण कर रहे हैं। मार्क्स के शब्दों में–''राज्य केवल ऐसा यंत्र है, जिसकी सहायता से एक वर्ग दूसरे का शोषण करता है।''

शोषक वर्ग राज्य का दुरूपयोग मजदूरों पर अपना नियंत्रण बनाए रखने के लिए प्रत्येक क्षेत्र में करता है। शिक्षण संस्थाओं में उन्हें यही सिखलाया और पढ़ाया जाता है कि राज्य के आदेश का पालन किया जाना चाहिए। कर्तव्य का पालन और नम्रता के गुण अपनाने चाहिए। इसी प्रकार मठ, मंदिर, गिरजाघर, मस्जिद और गुरुद्वारा आदि में आस्था, विश्वास और भाग्यवाद का पाठ पढ़ाते हुए बतलाया जाता है कि राज्य के आदेश का विरोध करना पाप है।

राज्य के वर्ग विभेद की प्रकृति पर बल देते हुए मार्क्स का कहना है कि वर्ग विभेद समाप्त होने और वर्गविहीन समाज की स्थापना हो जाने पर राज्य विलुप्त हो जाएगा और हर नंगे बदन को साबित वस्त्र मिलेगा। इससे स्पष्ट है कि राष्ट्र सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक, धार्मिक, भौगोलिक, सांस्कृतिक, भाषाई, संप्रभुता, मिथकीय एवं लोक परंपराओं का एक गुंफन है। राष्ट्रवाद या राष्ट्रीयता एक भावगत विचारधारा है जो उन लोगों में उत्पन्न होती है, जिनका देश, धर्म, नस्ल, भाषा, साहित्य, इतिहास, सामाजिक, आर्थिक, एवं राजनीतिक आकांक्षाएं एक समान होती हैं।

डॉ. अंबेडकर के शब्दों में राष्ट्रीयता एक सामाजिक चेतना है, एकता के संयुक्त भावों का आभास ही राष्ट्रीयता है। जिसमें व्यक्ति एक दूसरे को अपना सगा संबंधी समझने लगता है। यह एक प्रकार की श्रेणी के होने की भावना है।

राष्ट्रवाद या राष्ट्रीयता के प्रमुख तत्त्व

1. भौगोलिक निश्चितता
2. नस्लीय (प्रजाति) एकरूपता
3. भाषाई एकरूपता
4. मिथकीय–पौराणिक एकरूपता
5. धार्मिक–पंथीय विचारों की एकरूपता
6. ऐतिहासिक एकरूपता
7. राजनीतिक एवं प्रशासनिक एकरूपता
8. सांस्कृतिक एकरूपता
9. सामाजिक एवं नैतिक एकरूपता

इन्हीं तत्वों का संप्रभु की आज्ञानुसार परिपालन ही राष्ट्रवाद है अर्थात राष्ट्रवाद के तत्वों का पालन करना ही राष्ट्रवाद है। अब आता है, बहुराष्ट्रीयता का सवाल। कभी नेपाल का उद्धरण दिया जाता था कि वहां हिंदू राष्ट्र है। कभी दुनिया के तमाम देशों में एक राष्ट्र हुआ करता था, आज वैश्विकरण के युग में हर राष्ट्र बहुराष्ट्रीय हो गया है। आज भारत में पूरी दुनिया है तो पूरी दुनिया में भारत भी है। आज विश्व में कोई राष्ट्र एक राष्ट्र नहीं है। आज इसका रूप बहुत ही विकृत हो गया है–

कोई गर्व से कहता है कि हम हिंदू हैं,
कोई गर्व से कहता है कि हम मुसलमान हैं।
अरे, मानवता से भी कोई चीज बढ़कर है क्या?
कहना है तो गर्व से कहो कि हम इंसान हैं।।

आज भारत में एक नहीं अनेक राष्ट्र हैं, जिनकी नियति किसी भी दशा में ठीक नहीं है। सभी कहीं न कहीं एक दूसरे के प्रतिकूल हैं यानी कि मानवता के प्रतिकूल हैं, देश और समाज के प्रतिकूल हैं, कहीं ना कहीं उनमें पक्षपात अवश्य है–ये राष्ट्र हैं–

1. हिंदू राष्ट्र–वसुधैव कुटुंबकम् जगत सत्यं ब्रह्म मिथ्या
2. मुस्लिम राष्ट्र– मानवता
3. सिक्ख राष्ट्र – वाहेगुरू
4. ईसाई राष्ट्र– विश्व कल्याण
5. जैन राष्ट्र – अहिंसा परमोधर्मः
6. बौद्ध राष्ट्र– अहिंसा परमोधर्मः
7. पारसी राष्ट्र– जन कल्याण
8. रविदास राष्ट्र

इनके अतिरिक्त छः और भी राष्ट्र हैं –

1. जनजाति अथवा आदिवासी राष्ट्र
2. एंसीएंट इंडियन शूद्र दलित राष्ट्र
3. वैश्विक (विश्व) राष्ट्र–साम्राज्यवादी औपनिवेशिक
4. श्रमिक अथवा मजदूर राष्ट्र–विश्व मजदूर एक हों
5. शरणार्थी खानाबदोश राष्ट्र
6. अल्पसंख्यक पिछड़ा वर्ग राष्ट्र

उपरोक्त तेरह प्रकार के राष्ट्रों के पास स्वयं की संप्रभुता नहीं है, फिर भी इन वर्गीय (अल्पसंख्यक) राष्ट्रों को एक संप्रभु सरकार के अंतर्गत जबरिया एक राज्य का अंग माना गया है। ये मजबूर हैं और विवश होकर एक राज्य के अंतर्गत निवास कर रहे हैं, यदि इन्हें खुला छोड़ दिया जाए, सभी एक अलग राष्ट्र बनाने को तत्पर होंगे, हालांकि वे भी स्वतंत्र होकर भी स्वतंत्र नहीं रह सकेंगे, उनमें भी हिंसक वर्ग खूनी पंजे को धारदार कर खून चूसने से बाज नहीं आएगा, विश्व के कई राष्ट्रों में इसका विकृत रूप देखा जा सकता है किंतु भारत वर्ष के अंतर्गत निवास करने वाली अल्पसंख्यक वर्ग की पीड़ाएं भी असहनीय हैं।

हिंदू राष्ट्र के अंतर्गत आने वाली द्विज जातियां जो संख्या में 15 करोड़ हैं कि समस्याएं कम नहीं, 15 करोड़ मुस्लिम वर्ग अलग पीड़ित हैं, 2 करोड़ सिख, 2 करोड़ ईसाई, 2 करोड़ 40 लाख जनजाति तथा 25 करोड़ दलित वर्ग की समस्याएं बेशुमार हैं। इनमें 2 करोड़ शरणार्थी वर्ग अलग ही तड़प रहा है।

इस देश में 10 करोड़ जनजाति के लोग निवास करते हैं, इनकी दारूण दशा को कोई पूछने वाला भी नहीं है। इनके जीवन का आधार ही जो जल, जंगल और जमीन है को छीन लिया गया है। ये हीरे की खानों पर निवास करते हैं और भूख से मरते हैं, कार्पोरेट भेड़िये बिना इन्हें उजाड़े, विस्थापित किए हीरे, सोना, चांदी, निकाल नहीं सकते, इसलिए चंद कौड़ियों में या जबरिया घसीट–घसीट कर निकाल बेदखल कर दे रहे हैं और दुश्मन सरकार जालिमों के साथ सहयोग दे रही है। आज राष्ट्र का पहला और अंतिम चरण सिर्फ आदिवासियों का विस्थापन और उनका शोषण उत्पीड़न ही रह गया है। इनकी भाषा, संस्कृति, औद्योगिक क्षेत्र, जंगल, इनका सुशासन, लोक परंपरा, मिथक और इतिहास है। भारत राष्ट्र का शासन प्रशासन पूर्णतया इनके खिलाफ है। जल, जंगल, जमीन, संस्कृति और पहचान सब छीन लिया गया। जनजाति भारत का अल्पसंख्यक राष्ट्र है। भारत के ही बहुसंख्यक राष्ट्रों के द्वारा नित्य इनका शोषण किया जा रहा है, महाजनी सभ्यता एवं कार्पोरेट सभ्यता ने गुलाम बना लिया है। बल्कि यो कहें कि नरक बना दिया है। नंगी बहन, आंसू, भूख, टीस और पीड़ा ही इनकी नियति बन गई है।

इस देश में दो–ढाई करोड़ शरणार्थी और विस्थापित हैं, खानाबदोश हैं, ये दर–दर की ठोकरें खाने को मजबूर हैं। इसी देश के ये वासी इन्हें कहीं पैर रखने की जगह नहीं है, जहां कहीं ये गंदें नाले के किनारे कूड़े के ढेर पर कूड़े खाकर जीवन व्यतीत करना भी चाहते हैं। सभ्य लुटेरे यह आरोप लगाकर कि ये हिंसक और चोर हैं, भगा दिए जाते हैं। एक तो इन्हें भगा दिया जाता है, सब कुछ छीन लिया जाता है और शरण तक नहीं दी जाती है।

ईसाई इस देश का अल्पसंख्यक राष्ट्र हैं। इसकी आबादी आज भारत में ढाई करोड़ है। सन् 1940 ई. में ईसाई मिशनरीज ऑफ इंडिया ने जोरदार आंदोलन कर चार मांगे रखी थीं–1. पृथक धार्मिक अस्तित्व की प्रतिस्थापना, 2. राज्य की राजनीतिक गतिविधियों में हिस्सेदारी, 3. सरकारी नौकरियों में नियुक्तियां तथा 4. शिक्षा व्यवस्था में आधुनिक सुविधाएं, जमीन आदि।

बहुराष्ट्रीयता के सवाल पर डॉ. अंबेडकर ने कहा था कि हमारे देश में अल्पसंख्यकों की उपस्थिति एक हकीकत है, जिनके प्रश्न अनेक बार कई प्रकार की उग्र स्थितियां पैदा कर देते हैं, देश में सांप्रदायिक दंगे तो आम हो गए हैं। 31 दिसंबर 1930 ई. को डॉ. अंबेडकर ने कहा था, दलित अल्पसंख्यक हैं, इसलिए हम उनके लिए पृथक निर्वाचन की मांग करते हैं, हम व्यवहार और अधिकार दोनों में समानता चाहते हैं। अल्पसंख्यक दलित वर्ग को हिंदू से अलग करके देखा जाए।

डॉ. अंबेडकर की मांग को जायज मानते हुए दलित वर्ग को अल्पसंख्यक मानते हुए ब्रिटिश प्रधानमंत्री और भारत सचिव रेम्जे मेक्डोनाल्ड ने 20 अगस्त 1932 ई. को पृथक निर्वाचन के अधिकार की घोषणा कर दी। पृथक निर्वाचन की घोषणा के साथ ही सारे हिंदू जगत में कोहराम मच गया और महात्मा गांधी जो दलित वर्ग के जन्मजात दुश्मन थे, ने पूना के यरवदा जेल में यह कह कर आमरण अनशन शुरू कर दिया कि दलित तो हमारे कलेजे के टुकड़े है। देश के सारे चोटी के हिंदू लीडर डॉ. अंबेडकर के चरणों में झुक गए तो डॉ. अंबेडकर को भी झुकना पड़ा और पूना पैक्ट हुआ 24 सिंतबर, 1932 ई. को इसके खिलाफ में सारे देश में आंदोलन हुए और पृथक दलित राज्य की की मांग उठी। उस मांग को भी दबा दिया गया।

विवेकानंद ने कहा था, ''हमारा मजहब रसोईघर है, हमारा ईश्वर खाना पकाने वाले बर्तन में है और हमारा धर्म– मुझे मत छूओ क्योंकि मैं पवित्र हूं। यदि यही एक और शताब्दी तक रहा तो हम सभी पागलखाने में होंगे।'' इसी संदर्भ में राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के गुरु गोलवलकर ने कहा था– मुसलमान या अंग्रेज हमारे शत्रु नहीं थे, हम खुद ही अपने शत्रु हैं। इसके बाद भी हिंदू अपनी पवित्रता की मानसिकता को त्याग नहीं सका और 25 करोड़ दलित और 8 करोड़ 40 लाख जनजाति को अपने से एक होते हुए भी अलग कर दिया।

शूद्र जो इसी देश भारत की सैंधवी तथा शिवालिक इंडियन नस्ल है, इनका अस्तित्व लाखों वर्षों से रहा है। इनकी भाषा, संस्कृति, मिथक एवं इतिहास रहा है। पर शूद्र वर्ग को इसी देश में अन्य आक्रमणकारी राष्ट्रों के द्वारा, दस्यु और गुलाम बनाया गया और इन्हें अछूत, अस्पृश्य कहकर लतियाया गया। धन, धरती और शिक्षा से विहीन कर दिया गया। 15 अगस्त, 1946 ई. को डॉ. अंबेडकर भारत के कानून मंत्री बने और 19 अगस्त, 1947 को संविधान समिति के अध्यक्ष। संविधान सभा की अंतिम बैठक 26 नवंबर, 1949 को समाप्त हुई और इसी दिन 2 वर्ष 11 महीने 18 दिन में संविधान पूर्ण हुआ। इसी दिन से प्रभावी हो गया। 26 जनवरी, 1950 को भारत को गणतंत्र घोषित कर दिया गया। राष्ट्रीय एकीकरण के प्रयास अनुच्छेद–17 में अस्पृश्यता की समाप्ति, अनुच्छेद–29 (2) में शिक्षा व्यवस्था, अनुच्छेद–19 (1) में सम्पत्ति अर्जन, कोई भी वृत्ति, उपजीविका, कारोबार, व्यापार का अधिकार, अनुच्छेद–21 1 में बेगार प्रथा की समाप्ति, श्रमशोषण की समाप्ति, अनुच्छेद–21 में शोषण के विरूद्ध उपबंध, अनुच्छेद–275 में जनजाति विकास का प्रावधान अनुच्छेद–325 में समान मताधिकार, अनुच्छेद–330 तथा 332 में लोक सभा, विधानसभा, विधान परिषद में आरक्षण, अनुच्छेद–335 में नौकरी में आरक्षण अनुच्छेद 324 तथा 244 में विशेष विशेषाधिकार तथा अनुच्छेद–40 राज्य ग्राम

पंचायतों का गठन, स्वायत्त शासन की इकाई के रूप में। अनुच्छेद–15 में धर्म, जाति, लिंग, मूलवंश, नस्ल आदि के कारण नागरिक भेद–भाव को खत्म किया। अनुच्छेद–38 के द्वारा सामाजिक, आर्थिक व राजनीतिक संरक्षण प्रदान किया। अनुच्छेद–39 में नर–नारी समानता प्रदान की, समान काम, समान वेतन तथा यह निर्देशित किया कि आर्थिक व्यवस्था इस प्रकार चले कि जिससे धन और उत्पाद साधनों का सर्वसाधारण के लिए अहितकारी केंद्रण न हो।

पर सच तो यह है कि कोई अनुच्छेद काम नहीं आया। राजीव गांधी ने अनुसूचित जाति जनजाति अत्याचार निवारण अधिनियम–1989 बनाया था। जिसमें लोक सेवक तथा कानून के उल्लंघनकर्ता को भी सजा का प्रावधान था। पर वह कानून गर्त में खो गया। डॉ. अंबेडकर ने 25 दिसंबर, 1927 ई. को मनुस्मृति की होली जलाकर ब्राह्मणवाद के उन्मूलन की नींव रखी थी, पर संविधान ने उसे भी लील लिया। आज जरूरत है कि दलित संविधान संशोधन की मांग करें। देश के तमाम बुद्धिजीवी विभिन्न प्रकार की राष्ट्रीयताओं की समस्याओं को देखते हुए संविधान की मांग करें। संविधान में कहीं नहीं लिखा है कि सरकारी गोदाम भरा है, सड़ाकर समुद्र में फेंक दो और रोज लाखों भूखे मरे, दवा है, अथाह संपत्ति भरी पड़ी है और देश का 40% जनमानस बदहाल और फटेहाल है, दाने–दाने को मोहताज है और इसके जिम्मेदार लोकसेवक, पदाधिकारी, मठाधीश को, जज को सजा का कोई प्रावधान नहीं है।

क्या भारत गरीब देश है? भारत में 16 करोड़ 80 लाख 40 हजार हेक्टेयर भूमि के योग्य है। पर अकेले 10 करोड़ हेक्टेयर भूमि आज भी देश के सामंतों, महाजनों और कार्पोरेट के पास हैं। चीन के मात्र 10 करोड़ 90 हजार हेक्टेयर भूमि ही कृषि के योग्य है। पर वहां गरीबी 20% है तो भारत में 40%। भारत के बैंकों व डाकघरों में 50 हजार करोड़ रूपया जमा है। बैंकों और टैक्स में खरबों रूपए का लाभ प्रत्येक वर्ष हो रहा है और देश के 6 लाख 80 हजार गांवों में से 2 लाख गांवों में आज भी बद से बदतर स्थिति है। धूल, कीचड़, अस्वास्थ्य और भूखमरी के सिवाय कुछ भी नहीं हैं। शहरों में बिजली की चकाचौंध है और देश के दो लाख गांवों में आज भी ढिबरी की टिमटिमाहट है।

देश के अन्न भंडार भरे हैं, इतने कि 10 वर्षों तक सारे देश को फ्री खिलाया जा सकता है, पर लाखों लोग प्रत्येक वर्ष भूख से दम तोड़ रहे हैं। हमारे देश की प्रतिभाएं, जनशक्तियां वर्षों से पलायन कर रही हैं। जिससे कि 10 अरब रूपए का प्रत्येक वर्ष नुकसान हो रहा है। इसका जिम्मेदार कौन है? निश्चित रूप में देश की व्यवस्था और बहुराष्ट्रीय भावना की अनदेखी। दोमुंहापन और दोगलापन।

25 नवंबर, 1949 ई. को डॉ. अंबेडकर ने संविधान सभा में कहा था कि मेरा विचार है कि यह मानना कि हम एक राष्ट्र है, बहुत बड़ा भ्रम पालना है। जो लोग हजारों जातियों, वर्णों, धर्मों व संप्रदायों में बंटे हों वे एक राष्ट्र कैसे हो सकते हैं? हम लोग जितनी जल्दी यह महसूस करें कि हम सामाजिक, आर्थिक और मनोवैज्ञानिक तौर पर अभी एक राष्ट्र नहीं बन पाए हैं, उतना ही हमारा भला होगा, क्योंकि तभी हम एक राष्ट्र बनने की जरूरत को महसूस कर पाएंगे और उस लक्ष्य की प्राप्ति के लिए गंभीरतापूर्वक साधनों के विषय में विचार कर सकेंगें।

1818 ई. की भारत की प्रथम जनगणना में तत्कालीन गणना आयुक्त एम. ए. वेल्स ने एस. सी., एस.टी. वर्ग को मूलभारतीय आदिवासी और प्रकृतिपूजक कहा था। 1901 के जनगणना आयुक्त सर हरबर्ट रिसले ने प्रकृति पूजक और हिंदुत्व को अलग–अलग माना और लिखा।

कहने का तात्पर्य है कि भारत आज भी एक राष्ट्र नहीं बल्कि कई राष्ट्रीयताओं का एक संघ राष्ट्र है। महाराष्ट्र है जिसमें हर बहुसंख्यक के द्वारा हर अल्पसंख्यक का शोषण है, उत्पीड़न है, लूट है।

क्या भारत एक राष्ट्र हो सकता है? आज का सबसे बड़ा सवाल। क्या हिंदू मुसलमान हो सकता है? क्या मुसलमान हिंदू हो सकता है? क्या सिक्ख, ईसाई, जैन, बौद्ध, पारसी क्या एक दूसरे के राष्ट्र को अंगीकार कर सकते हैं? उससे भी बड़ा सवाल वियोगी हरि ने वर्षों पहले जिस विश्व मंदिर की कल्पना कर रहे हैं, क्या यह संभव है? आज से डेढ़ हजार वर्ष पहले आदिशंकराचार्य में विश्व राष्ट्र की कल्पना की थी और अपने ही भाई 25 करोड़ दलितों का दुत्कार दिया था और नारा दिया था–वसुधैव कुटुंबकम्। क्या विश्व एक कुटुम्ब हो पाया? नहीं, क्योंकि विश्व राष्ट्र के लिए नारा था, वसुधैव कुटुम्बकम् और भारत में नारा दिया था। स्त्री शूद्रौ नाधियताम–स्त्री शूद्र को शिक्षा नहीं, शूद्र ब्राह्मण से बहत्तर हाथ दूर रहें, 2. आर्यवाद 3. हिंदुत्त्व 4. ब्रह्मसत्यं जगत मिथ्या। और इस जगत को लूटने को क्या–क्या नहीं किया?

राष्ट्रीय एकीकरण एक मनोगत भावना है, जो विभिन्न प्रकार के मेढकों को एक बोरे में बंद करने के समान है। सामाजिक, सांस्कृति, भाषाई, धार्मिक एवं नस्लीय भेद–भाव को भुलाकर राष्ट्रीय एकीकरण संभव है, पर यह कभी संभव नहीं है। राष्ट्रीय एकीकरण के निम्नांकित बाधक तत्व हैं–

1. भौगोलिक असमानता
2. असंगत संप्रभुता
3. असंगत राज्य व्यवस्था
4. असंगत वितरण प्रणाली
5. एकपक्षीय कार्यपालिका और न्यायपालिका
6. विधायिका का असंगत गठन
7. विक्षिप्त मानसिकता
8. क्षेत्रवाद या क्षेत्रीयता
9. भाषावाद
10. सांस्कृतिक–या संस्कृतिवाद
11. सांस्कृतिक राजनीतिक आकांक्षा
12. सामाजिक अन्याय (विषमता)श
13. सांप्रदायिक मनःस्थिति
14. जातिवादी मानसिकता (ब्राह्मणवाद)
15. धार्मिक पूर्वाग्रह
16. उग्रपंथी विचारधारा
17. स्वार्थपूर्ण कुटिल नेतृत्व
18. अवैज्ञानिक दिशाहीन शिक्षा व्यवस्था
19. वैश्विकीरण की लालीपाप
20. आर्थिक विषमता और द्ररिद्रता

आर्थिक विषमता वो खाई है, जिसे पाटना शायद असंभव है, बहुराष्ट्रीय खूनी कंपनियां तो इसकी दुश्मन हैं ही, इनके दलालों की भी कोई कमी नहीं, बल्कि भरमार है। जहां साम्राज्यवाद पूंजी का विशाल पहाड़ खड़ा कर लिया है, वहीं 40% आम श्रमिक जनता आंसू के घूंट पीकर जी रही है। कथरी में अपनी जिंदगी गुजार रही है। आदिम साम्यवाद को साम्यवाद बनने से पूंजीपतियों, उनके पिट्ठू दलालों तथा उनकी गुलाम सरकारों ने रोका है और एक और मुख्य कारण है वो ये है कि साम्यवादी प्रबुद्ध वर्ग आम अरबों जनशक्ति को सचेत नहीं कर सका है। मार्क्स, लेनिन, स्टालिन, माओ और अंबेडकर ने एक अच्छी पहल की थी जिसे ब्राह्मणवादी, सामंतवादी और पूंजीवादी खूनी पंजों ने चिथड़े–चिथड़े कर दिया।

भारत में गांधीवादी कुनीति, धर्मनीति और रामराज की परिकल्पना को निरर्थक प्रयास करने अर्थहीनता ने ज्यादा बेड़ा गर्क किया है। पंडित जवाहरलाल नेहरू ने एडगर सनो से एक वार्तालाप में कहा था–''मैं ऐसे किसी धर्म से कोई नाता नहीं रखना चाहता जो जनता को भूख, गंदगी और अज्ञान में संतुष्ट रखता है। मैं ऐसी किसी व्यवस्था, धार्मिक या दूसरों से कोई संबंध नहीं रखना चाहता, जो लोगों को यह नहीं सिखाती कि वे इसी दुनिया में इसी धरती पर और ज्यादा प्रसन्न एवं ज्यादा सभ्य होने के योग्य हैं। सच्चे इंसान अपने भाग्य विधाता और अपनी आत्मा के कर्णधार बनने के योग्य हैं, इसकी प्राप्ति के लिए मैं पुरोहितों को काम में लगा दूंगा और मंदिरों को मैं स्कूलों में परिवर्तित कर दूंगा। पर क्या नेहरू, क्या गांधी क्या कोई अन्य सब के सब नेतृत्व सिर्फ लफ्फाज ही निकले। राष्ट्रीय एकीकरण तो सिर्फ राजनेताओं की जुगाली थी।

डॉ. अम्बेडकर ने इसीलिए एक चेतावनी दी थी–''यदि हिंदू राज एक हकीकत बन जाता है तो निःसंदेह यह देश के लिए एक बहुत बड़ी आपदा होगी, हिंदू चाहे कुछ भी कहें हिंदू समता, स्वतंत्रता, समानता और बंधुत्व के लिए एक खतरा है। इस कारण यह लोकतंत्र बेमेल है, हिंदूराज की स्थापना को हर कीमत पर रोकना होगा।'' रेलवे कर्मचारियों को मनमाड में 12–13 फरवरी, 1938 में भाषण देते हुए कहा था कि हमें राष्ट्रीय एकीकरण के लिए राष्ट्रीयताओं को चिन्हित करना होगा और 1. ब्राह्मणवाद की समाप्ति, 2. पूंजीवाद की समाप्ति अनिवार्य है। इसी उद्देश्य के लिए 17 दिसंबर, 1946 ई. को डॉ. अंबेडकर ने राज्य समाजवाद की योजना पेश की थी और राज्य समाजवाद की सफलता के लिए उन्होंने जमीन के राष्ट्रीयकरण, बैंक, बीमा के राष्ट्रीकरण, शिक्षा के राष्ट्रीकरण एवं उद्योग के राष्ट्रीयकरण की बात की थी।

कुल मिलाकर जब तक जनजाग्रति नहीं होगी, सोए हुए श्रमिक शेर नहीं जागेंगे और जब तक हम दलित, पीड़ित मजलूम नहीं जागेंगे साम्राज्यवाद पर नकेल नहीं लग सकती। आज समय की जरूरत है टाटा, बाटा, बिड़ला, बुश और कार्लाइल तोसीबा जैसे पूंजीपतियों के शोषणवृत्ति के खात्मे की। इनकी अथाह संपत्ति को राज्य संपत्ति में परिवर्तित करने की । यह संभव है जनआंदोलन से और जहां तक मैं समझता हूं जन आंदोलन की आग भारत की धरती पर भी लग चुकी है। आशा है सीटू एक भारतीय अक्टूबर (1917) की राज्य क्रांति की।

क्रांति का प्रथम हथियार है शिक्षा। शिक्षा वो शेरनी का दूध है, जो पीएगा निश्चय ही गुर्राएगा। पर जातिवादी, धर्मवादी, अलगाववादी शिक्षा नहीं, विकास, विज्ञान और सचेतन शिक्षा। एक पूर्ण शिक्षित व्यक्ति क्रांति की मशाल बन जाता है। वास्तव में शूद्रों और सर्वहारा समाज की खुशहाली का केवल एक शिक्षा ही उपाय है। शिक्षा से मनुष्यत्व प्राप्त होता है, पशुत्व नष्ट होता है और सर्वजनसुखाय की प्राप्ति होती है। शिक्षा के लिए ज्योतिबा फूले ने कहा है –

उठो बंधुओं! अति शूद्रों जाग्रत हो उठो
परंपरा की गुलामी नष्ट करने के लिए उठो
बंधुओं! शिक्षा के लिए उठो!!

डॉ. अंबेडकर ने कहा था–"Brahmin is the poison which has spoiled hinduism." अर्थात ब्राह्मणवाद वह विष है, जिसने पूरे हिंदुस्तान को दूषित व भ्रष्ट किया है।'' डॉ. अंबेडकर ने ब्राह्मणी मतिभ्रांति को मानवता का शत्रु माना है और कहा है कि–1. इस प्रतिक्रांति ने राजवध यानी राजा की हत्या करने और राज्य करने का ब्राह्मण का अधिकार स्थापित किया, 2. इससे ब्राह्मण वर्ण का विशेषाधिकार युक्त वर्ग निर्मित किया, 3. ब्राह्मणी प्रतिक्रांति ने वर्ण को जाति में परिवर्तित किया, 4. इससे विभिन्न जातियों में कलह और समाज विरोधी भावनाएं पैदा कीं, 5. इसने शूद्रों और स्त्रियों का मान भंग किया, उनको नीच बनाया और अपमानित किया, 6. इसने क्रमवार असमता की पद्धति को गढ़ा तथा 7. इसने रूढ़ (परंपरा) और लचीली सामाजिक व्यवस्था को कड़ा और कानून रूप दिया।

इससे स्पष्ट होता है कि कहीं ना कहीं इन नेतृत्वों में ही खोट था। यदि ऐसा न होता तो एक वर्ग इतना सुखी और दूसरा वर्ग इतना दुखी कतई न होता। प्रसिद्ध शायद फैज अहमद 'फैज' ने ठीक ही कहा है कि–

हर चार, गर को चार, गरी से गुरेज था,
वरन हमें जो दुख थे लादवा न थे।।

अर्थात वैद्य ने जान बूझकर हमारे इलाज नहीं किया, वरना हमारे रोग कतई लाइलाज नहीं थे।

प्रमुख संदर्भ और टिप्पणियां

1. डॉ. सोहन लाल सारस्वत–राजनीतिशास्त्र, ग्रंथम, साकेत नगर, कानपुर प्रथम संस्करण–1995 पृष्ठ–63 / 64
2. एल. आर. बाली डॉ. अंबेडकर ने क्या किया?
3. Socio Political Views of PRVEMPD P-25
4. एल. आर. बाली–डॉ. अंबेडकर ने क्या किया?
5. डॉ. अंबेडकर संपूर्ण वांग्मय–खंड–5 पृष्ठ–48
6. एल. आर. बाली–डॉ. अंबेडकर ने क्या किया?
7. एम.एल. गुप्ता समाजशास्त्रीय निबंध
8. पाकिस्तान और भारत का विभाजन, बाम्बे–1946 पृष्ठ–13
9. सेंसस ऑफ इंडिया–1 / 1 पृष्ठ–158
10. द पीपुल्स ऑफ इंडिया–संस्करण द्वितीय, पृष्ठ–218
11. सेंसस ऑफ इंडिया–1921, बिहार–उड़ीसा रिपोर्ट
12. एल.आर.बाली–डॉ. अंबेडकर ने क्या किया?
13. गोलवलकर–बंच ऑफ थॉट्स (विचार नवनीत)
14. जवाहर लाल नेहरू–एडगर सनो जर्नी ऑफ दी बिगनिंग, पेज–77
15. डॉ. अंबेडकर–राइटिंग एंड स्पीचेज, बम्बई–1990 खंड–8, पृष्ठ–358
16. ज्योतिबा राव फूले–वामसेफ प्रकाशन
17. राष्ट्रपिता ज्योतिराव फूले–डी.के. खापर्डे
18. वसुधा–दलित अंक–58
19. एल.एल. दुसाध–डाइवर्सिटी–ईयर बुक–2006
20. बी.एन. गौड़–सामाजिक चिंतन

साभार :
शूद्रों का प्राचीनतम–इतिहास
पेज संख्या 392 से 402तक
एस. के. पंजम

शूद्र एक नस्ल है जाति नहीं

वैज्ञानिक शब्दावली में नस्ल को रेस (RACES) कहते हैं। रेस और नस्ल एक नाम है। यही नस्ल ही वैज्ञानिक शब्दावली में प्रजाति है, किंतु भारत में जिन आर्यों का आगमन हुआ, आगमन के बाद भारत महाद्वीप (भारत, बर्मा, नेपाल, पाकिस्तान, बांग्लादेश तथा श्रीलंका) पर कब्जा और तत्पश्चात खुद आर्यों के तीन भाग (श्रेणी) में बंट जाने के बाद आर्यों ने प्रजाति (RACES) की जगह जाति (CAST) कर दिया जो आज घृणा का घृणितम रूप है। प्रजाति (नस्ल) से जाति की देन आर्यो की सोची–समझी रणनीति के तहत है। हालांकि जातियों का विभाजन पेशे के कारण पेशे के नाम पर हुआ और यह नाम दिया, भूपतियों, सामंतों, मालिकों, तथा नरेश अमात्यों ने, जो कालांतर में जन्मगत हो गया।

भारत में जिस नस्ल (सैंधव, शिवालिक) की उत्पत्ति हुई, वहीं आर्यों के आगमन के हजार वर्ष बाद शूद्र बन गई, बन यों गई कि आर्य अपने को श्रेष्ठ तथा भारतीय नस्ल (प्रजाति) को जाहिल, गंवार, अनार्य, डोम, चांडाल, दास, दस्यु, अबोध, शबर, शांबर, वानर, राक्षस और गुलाम (शूद्र) कहते थे। प्रारंभ में सैंधव और शिवालिक (HOMO SAPIENS-SAPIENS) की जगह शूद्र शब्द का प्रयोग करते थे और करते रहे और अपने को आर्य (SAPIENS) कहते रहे।

भारत में जो आर्य प्रजाति (RACES) है, वह कोई एक तथा आर्य नाम की कोई प्रजाति नहीं है। आर्य का आर्य श्रेष्ठ कहकर बाहर से आई प्रजातियों ने अपने समूह (विदेशी समूह) का नाम रखा है। मुख्यतः आर्य की तीन प्रजातियाँ हैं, जो आज ब्राह्मण, क्षत्रिय तथा वैश्य के रूप में विभाजित हैं। आर्य का दूसरा नाम (द्विज) भी है। आर्य की तीन प्रजातियां (RACES) निम्नलिखित हैं –

i) **निएंडरस्थल (HOMO SAPIENS) -** फूहलरोट ने 1856 में खोज कर बताया कि इस प्रजाति की उत्पत्ति 1.5 लाख वर्ष पूर्व अफ्रीका में हुई जो कालांतर में यूरोप तथा एशिया (भारत उपमहाद्वीप) आदि में फैली। जो आज द्विज–ब्राह्मण+क्षत्रिय+वैश्य है।

ii) **ग्रीमाल्डी(HOMO-SAPIENS-SAPIENS) -** यूजीन डुबाय ने 1891 में खोज कर यह बताया कि इस HOMO ERECTUS प्रजाति की उत्पत्ति मध्य एशिया की पहाड़ियों में हुई जिसकी एक शाखा यूरोप तथा दूसरी शाखा भारतीय उपमहाद्वीप में फैली।

iii) **क्रोमेग्नन (CRO-HOMO-SAPIENS) -** इस प्रजाति की उत्पत्ति केवल 32000 वर्ष ईसा पूर्व में फ्रांस के डोडोन प्रांत के क्रो–मेग्नन की पहाड़ियों में हुई। इस प्रजाति की खोज–मैक्ग्रीगर ने सन् 1868 में की और बताया कि यह प्रजाति फ्रांस की पहाड़ी से निकलकर प्रथम समूह–इटली, द्वितीय समूह–जर्मनी, तृतीय समूह–भारतीय उपमहाद्वीप, चतुर्थ समूह– चेकोस्लोवाकिया, पंचम समूह–अफ्रीका, षष्ट समूह–इजराइल तथा सप्तम समूह– ईजियन तट पर पसर गई। भारतीय उपमहाद्वीप की शाखा समूह पूर्व की तीन शाखाओं में विलीन हो गई। जो आज द्विज–ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य के रूप में विद्यमान हैं और आज 1400 उपजातियों में बंटे हुए हैं। आर्य आज एक संकर प्रजाति (नस्ल) है जो सैंधव–शिवालिक को टुकड़ों में बांटकर स्वयं बिखरे हुए हैं।

भूतकाल का अध्ययन करके ज्ञान प्राप्त करना तो ठीक है किंतु भूतकाल को पढ़कर भूत बन जाना ठीक नहीं है, अथवा भूतकाल का ही होकर नहीं रह जाना चाहिए। डॉ. अंबेडकर ने भूतकाल में केवल आर्य साहित्य को पढ़ा तथा पढ़कर आर्य बनकर रह गए। डॉ. अंबेडकर ने शतपथ ब्राह्मण को वेद की पूर्व की रचना मानकर एक ब्राह्मणी से शादी करने के बाद अपने को आर्य (क्षत्रिय) सिद्धि करने में जीवन बिता दिया। शादी के बाद अंतिम रचना (बुद्ध और बौद्ध धम्म अंतिम रचना है तथा शूद्र कौन थे? शादी के तुरंत बाद लिखा।) शूद्र कौन थे? में लिखते हैं कि शूद्र पहले आर्य (क्षत्रिय) था। अर्थात भारत के सारे शूद्र क्षत्रिय हैं, और आर्य नस्ल के अनुसार डॉ. अंबेडकर ने जबरदस्ती क्षत्रिय बनकर शूद्रों को ब्राह्मणों का जातीय पुछल्ला लगा दिया। जो आज शूद्र लटका हुआ है शून्य में–डॉ. अंबेडकर ने एक तरफ तो शूद्रों को, जो एक विश्व की स्वतंत्र नस्ल है, एक मच्छर की तरह बना दिया कि वह आर्यों का ही एक वर्ण क्षत्रिय है। उधर क्षत्रिय (द्वितीय वर्ण) का पुछल्ला भी जोड़ दिया और उधर बौद्ध धर्म भी ग्रहण कर कह दिया कि बौद्ध धर्म ग्रहण करो। अब करोड़ों शूद्र बीच में लटक गए। न क्षत्रिय लिख पाते हैं, न बन पाते हैं और न क्षत्रिय वर्ण की सुविधा पाते हैं, न हिंदुत्व छोड़ पाते हैं, न बौद्ध अपना पाते हैं और न ही अपनी शूद्र नस्ल की अस्मिता के लिए ही संघर्ष कर पाते हैं। डॉ. अंबेडकर शूद्र नस्ल को अपना मानकर (जो कि वे हैं) शूद्र नस्ल की अस्तित्व की लड़ाई लड़ते, शूद्र–सैंधव या शिवालिक धर्म का या कोई भी नाम देकर बौद्ध धर्म को अपना लेते तो शूद्रों की आज यह दुर्दशा न होती। शूद्र आज मारे–मारे न फिरते।

वर्तमान भारत में निवास करने वाली विदेशी नस्लें

1. आर्यन (ARYAN NORDIC) -

i) आगमन काल–उ.पू. 2000–उ.पू. 1600 तक

ii) भारत में कहां–कहां हैं?–बंगाल, उड़ीसा, केरल, तमिलनाडु, गुजरात, महाराष्ट्र, सिंध, पंजाब, राजस्थान एवं गंगा की घाटी में बस गए। सैंधव निवासियों का कत्ल करते हुए, अधिकतर भागों पर कब्जा कर लिए। अब सारे भारत वर्ष में फैले हैं, वर्तमान सामाजिक, राजनैतिक, आर्थिक एवं धार्मिक क्षेत्रों में हावी हैं।

iii) विश्व में कहां–कहां से आए?

A. यूरोप के स्टेपी प्रदेश से
B. टुंड्रा प्रदेश के यूराल पर्वत (कंदराएं) से
C. स्वीडेन से F. मलेशिया से
D. नार्वे से G. सं रा. अमेरिका से
E. ब्रिटेन से H. उत्तरी अफगानिस्तान से

iv) नार्डिक की विशेषताएं –

A. शारीरिक एवं मानसिक रूप से श्रेष्ठ
B. आंखों का रंग नीला एवं भूरा
C. सिर माध्यमिक रूप से ऊंचा
D. ललाट सीधा–चमकदार
E. नाक छोटी–प्यारी
F. चेहरा छोटा
G. अक्षर पतले
H. बाल पीले भूरे एवं लहरदार
I. कपाल सूचकांक उत्तम
J. ईर्ष्यालु, हिंसक एवं अंधविश्वासी

v) वर्तमान पहचान – दक्षिण में द्रविण–ब्राह्मण, अन्य जगहों में क्षत्रिय एवं ब्राह्मण

2. आर्यन – ARYAN (ALPINE)

I. आगमन काल–ई.पू. 1600–ई.पू. 1000 तक

II. भारत में कहाँ–कहाँ हैं ?

महाराष्ट्र, गुजरात, बंगाल, केरला, कर्नाटक, उत्तर प्रदेश, बिहार एवं जम्मू–कश्मीर, सैंधव–शिवालिकसे अविराम से खूंखार अल्पाइन संघर्ष करते, हारते–हराते, कब्जा कर यहीं उपनिवेश बनाकर बस गए। धीरे–धीरे यहीं इन्ही में घुल–मिलकर यहीं के होकर रह गए। अब सारे भारत वर्ष में ये अपने चाल–जाल एवं फरेब के बल पर सैंधव। शिवालिक पर हावी होकर दबदबे के साथ रह रहे हैं। आज इनकी रक्तशुद्धता खत्म हो चुकी है क्योंकि सैंधव–शिवालिक शूद्र इनके रक्त में अपना रक्त मिलाकर शूद्र बना चुके हैं।

III. विश्व में कहाँ–कहाँ से आए?

A. मध्य यूरोप के स्टोपी प्रदेश से
B. कोस्टेंस झील से घिरे आल्पस पर्वत की कंदराओं से
C. मध्य एशिया के देमाबंद की कंदराओं से
D. ईजियन सागर की शाखा डेन्यूब की घाटी से
E. बोल्गा नदी की घाटी से

IV. वर्तमान पहचान–दक्षिण भारत में द्रविण तथा अन्य जगह ब्राह्मण

V. आर्यन्स–अल्पाइन की विशेषताएं –

A. शारीरिक एवं मानसिक रूप से स्वस्थ
B. कपाल सूचकांक मध्यम
C. सिर ऊँचा, ललाट सीधा
D. नासा सूचकांक मध्यम
E. त्वचा का रंग हल्का श्वेत एवं लाल
F. होंठ पतले गुलाबी
G. औसत कद–165 सेंमी से 170 सेंमी तक
H. चेहरा लंबा चमकदार
I. ईर्ष्यालु एवं कट्टर धार्मिकता

3. भूमध्यसागरीय (MEDITERRANEANS) -

I. आगमन काल–उ.पू.–1200–ई.पू. 400 तक

II. भारत की तीन प्रमुख प्रजातियों (नीग्रेटो, पूर्व द्रविण और मंगोल) के तत्व ही अधिक हैं। ये भूमध्य सागरीय, एल्पो डिनारिक और नार्डिक प्रजाति हैं। इनमें अधिकाधिक भूमध्यसागरीय हैं। इस प्रजाति की अनेक किस्में हैं जो लंबे सिर, काले रंग और अपनी ऊंचाई द्वारा पहचानी जाती हैं, भारत में इस प्रजाति की तीन किस्में निम्नांकित हैं–

क) प्राचीन भूमध्य सागरी–(PALAEO)

ये लोग काले और सांवले होते हैं। चेहरा लंबा लहरदार, नाक चौड़ी, कद–मध्यम, बाल इनके सारे शरीर पर होते हैं। दक्षिण भारत के तमिल ब्राह्मण तथा तेलुगू ब्राह्मण इस प्रजाति की निशानी हैं। ये विशेष धार्मिक तथा असभ्य होते हैं।

वर्तमान पहचान–तमिल ब्राह्मण, तेलुगू ब्राह्मण

(ख) भूमध्यसागरीय–(MEDITERRANEANS)

I. भारत में कहां–कहां हैं?

पंजाब, कश्मीर, राजस्थान तथा उत्तर प्रदेश

वर्तमान पहचान–पंजाब, कश्मीर, राजस्थान तथा उत्तर प्रदेश के ब्राह्मण यही हैं। मध्य प्रदेश के मराठा ब्राह्मण, कोचीन, महारष्ट्र व मालाबार के ब्राह्मण यही हैं।

III. भारत में कहां–कहां से आए?

A. दक्षिण टर्की से
B. निकोसिया (साइप्रस) से तथा
C. पूर्वी यूरोप से

IV. भूमध्य सागरीयंस की विशेषताएं–

A. शारीरिक रूप से स्वस्थ
B. मानसिक रूप से कट्टर, ईर्ष्यालु, हिंसक
C. कपाल सूचकांक मध्यम
D. त्वचा का रंग भूरा–श्वेत
E. आंखों का रंग भूरा
G. बाल–काले, लहरदार

ग) पूर्वी अथवा सेमेटिक प्रजाति (ORIENTAL RACE)

इनकी नाक लंबी–नतोदर है। ये पंजाब, राजस्थान तथा पश्चिमी उत्तर प्रदेश में फैले हैं। इस समय ये कुछ ब्राह्मण तथा कुछ क्षत्रिय के रूप में विद्यमान है।

4. प्रोटो आस्ट्रेलायड (PROTO-AUSTRALOID)-

I. आगमन काल–ई.पू. 600–ई.पू. 400 तक

II. भारत में कहां–कहां हैं?

राजस्थान, गुजरात एवं महाराष्ट्र में बड़ी मजबूती से जमे हुए हैं। यहां पर ये कुछ द्रविण, कुछ अनुसूचित तथा कुछ जनजातियों में मिले हुए हैं। कहीं इनकी पहचान संभव तथा कहीं असंभव हैं। इनकी एक विशेष पहचान है कि ये जहां भी होंगे/हैं। बड़े चालाक, हिंसक एवं धार्मिक कट्टरता लिए हुए हैं। ये पशु बलि में विश्वास रखते हैं, ये

गिद्ध दृष्टि रखते हैं।

III. ये कहां–कहां से आए हैं?

A. फिलीस्तीन

B. आस्ट्रेलिया

IV. प्रोटो आस्ट्रेलायड की विशेषताएं–

A. कद छोटा

B. त्वचा का रंग भूरी–काला

C. सिर लंबा, नाक–चपटी, चौड़ी

D. बाल घुंघराले

E. होंठ मोटे और मांसल

F. कपालगुहा का आयतन–1274–1775 CC

G. ईर्ष्यालु, हिंसक एवं धार्मिक कट्टरता

H. चेहरा मध्यम

V. वर्तमान पहचान–दक्षिण भारत में चेंचू, मलायन, कुरूंबा, यरूबा, मंडा, कोल, संथाल और भील समूह के रूप में विद्यमान। उत्तर प्रदेश तथा मध्य प्रदेश में कुर्मी एवं लोहार के रूप में।

6. नीग्रीटो (NEGRITOS)

I. आगमन काल–ई.पू.–1000–ई.पू. 500 तक

II भारत में कहां–कहां हैं?

दक्षिण भारत की जनजातियों में हैं। अंडमान तथा निकोबार द्वीप समूह में हैं। असम तथा पूर्वी बिहार की राजमहल की पहाड़ियों में हैं। उत्तर में हिमालय की तलहटी में हैं। दक्षिणी द्वीपों पर हैं।

III. वर्तमान पहचान–अंगामी नागा, बांगड़ी, इरूला, कडार, पुलायन, मुथुवान, कन्नीकर, परियान, सेमांग और ओरांव जनजातियों के रूप में विद्यमान हैं।

IV. भारत में कहां–कहां से आए?

A. सर्वप्रथम मलेशिया से बंगाल की खाड़ी के प्रवेश द्वार से घुसे। कुछ उत्तर में हिमालय की तलहटी में तथा कुछ दक्षिण के द्वीपों पर गए।

B. दूसरी किस्त समूह आस्ट्रेलिया से आए जो राजस्थान एवं लाहौर के क्षेत्रों में संघर्ष कर–करके वहीं बस गए।

V. नीग्रीटो की विशेषताएं–

A. शारीरिक रूप से गठे स्वरूप

B. कपाल गुहा का आयतन–1200–1400 CC तक

C. आंखों का रंग–नीला–भूरा

D. त्वचा का रंग–श्वेत–श्याम

E. कद–165 सेंमी. तक

F. अधर–पतले–मध्यम

G. सिर–माध्यमिक रूप से ऊंचा

H. ईर्ष्यालु, हिंसक एवं घोर धार्मिकता

6. मंगोलायड (MONGOLOIDS)

I. आगमन काल–ई.पू. 400– से 40 ई. तक

II. भारत में कहां–कहां हैं?

इस प्रजाति की उत्पत्ति मलेशिया से हुई है। इनका मूलस्थान एशिया ही है। चीन, मंगोलिया, मंचूरिया, कोरिया, मध्य एशिया आदि भागों में इनकी संख्या बहुतायत है। तिब्बती मंगोलायड की संख्या में विराजमान है। इनका कद लंबा, चौड़ा सिर, हल्का रंग, नाक थोड़ी दबी हुई होती है, इनके शरीर पर बाल बहुत कम होते हैं। श्रम इनकी नियति है।

III. वर्तमान पहचान–यह उप हिमालय प्रदेश, असम और बर्मा की सीमा पर नागा, मीरी और बोंडों के नाम से पाई जाती है। बांग्लादेश में चिटगांव पर्वतीय मूल निवासी जैसे चकमास इसी श्रेणी के हैं। इस प्रजाति की उत्पत्ति मध्य एशिया से हुई है। दक्षिण तथा (उत्तर भारत में कम) महाराष्ट्र, गुजरात प्रांत में तथा उड़ीसा और बिहार में ब्राह्मण और राय–ठाकुर के रूप में विद्यमान।

IV. कहां–कहां से आए?

A. उत्तर अल्पाइन (मंगोलिया) के पठार से

B. उत्तरी अफगानिस्तान से

C. सायान पर्वत माला

D. उलान पर्वत माला

V. मंगोलायड्स की विशेषताएं–

A. गोल सिर–कपाल सूचकांक 85–89

B. बाल सीधे और चपटे

C. चेहरा और जबड़ा नतोदर

D. नाक पतली और संकरी

E. रंग हल्का–पीला सा खुमानी

F. गुस्सैल, हिंसक और अंधविश्वासी

G. मुख्याहार–मांस, मदिरा, फल–कंद मूल

साभार – शूद्रों का प्राचीनतम इतिहास
पृष्ठ सं. 84 से 91
एस. के. पंजम

सेवा में,

नाम .....

पता .....

.....

.....

तपस्या का परीक्षण

1. गौतम ने सांख्य–मार्ग तथा समाधि–मार्ग का परीक्षण कर लिया था। लेकिन वह तपश्चर्य्या का परीक्षण बिना किये ही भृगुओं के आश्रम से चला आया था।
2. उसे लगा कि इसके बारे में भी उसका स्वानुभाव होना चाहिए ताकि वह अधिकार से इसकी चर्चा कर सके।
3. तद्नुसार गौतम गया पहुंचा। वहाँ पहुंच कर सबसे पहले उसने धूम फिर कर आस पास का इलाका देखा। बाद में उसने तपश्चर्य्या के लिये गया के राजर्षि नगरी के आश्रम मे– जो कि ऊरूवेला में था–निवास करने का निश्चय किया। तपश्चर्य्या के लिए नेरञ्जरा नदी के तट पर यह एक एकान्त स्थान था।
4. उल्वेला में उसे वह पाँच परिवाजक भी मिले जो उसे राजगृह में मिले थे और जिन्होंने उसे 'शान्ति का समाचार' लाकर सुनाया था। वे भी तपश्चर्य्या का अभ्यास कर रहे थे।
5. उन तपस्वियों ने उसे देखा और उसके पास आकर कहा कि वह उन्हें भी साथ ले लें। गौतम ने स्वीकार किया।
6. इसके बाद से वे उसकी सेवा करते हुए उसकी आज्ञा में रहने लगे। वे उसके प्रति बड़े विनम्र थे और जैसा वह कहे वैसा करने वाले थे।
7. गौतम की तपस्या तथा आत्म–क्लेश की प्रक्रिया अत्यन्त उग्र रूप की थी।
8. कभी कभी वह केवल दो तीन घरों पर ही भिक्षाटन के लिए जाता, सात घरों से अधिक पर कभी नहीं। और उन घरों में से भी एक एक घर से दो तीन कौर भोजन ही स्वीकार करता, सात कौर से अधिक किसी एक घर से नहीं।
9. एक दिन में एक दो कटोरी भर भोजन पर ही गुजारा करता, सात कटोरियों से अधिक किसी हालत में नहीं।
10. कभी कभी वह सारे दिन में एक ही बार भोजन करता, कभी कभी दो दिनों में एक बार, इसी क्रम से–कभी कभी सात दिनों में एक बार, या पन्द्रह दिनों में भी एक बार और बड़ी ही नपी–तुली मात्रा में।
11. जब उसने तपश्चर्य्या में और प्रगति की तो उसका आहार जंगल से इकट्ठी की हुई हरी जड़ें मात्र रह गया था, या अपने से उगे हुए जौ या धान के दाने, या पेड़ों की छाल के टुकड़े, या काई, या चावल के गिर्द भूसी के अन्दर के लाल कण, या उबले हुए चावल की पीछ, या सरसों आदि की खली।
12. वह जड़ें और जंगली फल खाकर रहता था, या जो स्वयं हवा से अपने आप गिरें।
13. उसके कपड़े या तो सन के बने थे, या सन की रस्सी और कूड़े के ढेरों पर पड़े हुए चीथड़ों के, या पेड़ की छाल के, या आधी या पूरी मृग–छाल के या घास के या छाल की लकड़ी की पट्टियों के, या आदमियों या पशुओं के बालों से बने कम्बलों के और या उल्लू के परों के।
14. वह अपने सिर और दाढ़ी के बाल नोच–नोच कर उखाड़ता था, वह हमेशा सीधा और पालथी मार कर बैठता था तथा वह पालथी मारे मारे आगे सरकता था–वह खड़ा नहीं होता था।
15. इस तरह से तथा और भी नाना प्रकार से वह अपने शरीर को कष्ट और पीड़ा पहुँचाता था–उस की तपश्चर्य्या इस सीमा तक पहुंच गई थी।
16. अपने शरीर के प्रति उपेक्षा के भाव को वह इस सीमा तक ले गया कि वर्षों तक उसके शरीर पर मैल जमती रही जो कि बाद में अपने आप गिरने लगी।
17. वह भयानक घनघोर जंगल में रहता था, ऐसे घनघोर जंगल में कि उसके बारे में कहा जाता था कि एक पागल के सिवा और कोई उस जंगल में प्रवेश करने का साहस नहीं कर सकता। यदि करेगा तो उसके रोंगटे खड़े हो जायेंगे।
18. शीत ऋतु में जब रातें भयानक ठण्डी हो जाती तो कृष्ण पक्ष के दिनों में रात को वह खुले में रहता और दिन के समय धुप अन्धेरे में।
19. और जब वर्षा के ठीक पहले ग्रीष्म ऋतु की भयानक गरमी पड़ने लगती तो दिन में वह सूर्य के नीचे रहते और रात को सांस घोट देने वाली गरमी में भीतर जंगल में।
20. वह श्मशान–भूमि में मुर्दों की हड्डियों का तकिया बनाकर लेटता।
21. इसके बाद गौतम एक दिन में एक ही फली खाकर दिन बिताने लगा–बाद में एक ही सरसों का दना–बाद में एक ही चावल का दाना।
22. जब वह एक दिन में केवल एक ही दाना खाकर गुजारा करने लगा तो उसका शरीर बहुत क्षीण हो गया।
23. यदि वह अपने पेट को स्पर्श करता, तो उसका हाथ उसकी पीठ को जा लगता, यदि वह अपनी पीठ को स्पर्श करता, तो उसका हाथ उसके पेट को जा लगता। उसका पेट और पीठ एक दूसरे के इतने नजदीक सट गये थे। यह सब कुछ उसकी अत्यन्त अल्पाहरता के कारण हुआ था।

साभार – भगवान बुद्ध और उनका धर्म
पृष्ठ सं. 58 से 60
डॉ. भदन्त आनन्द कौसल्यायन